# राष्ट्र विरोधी उपन्यास

# आनन्द मठ

# व

# वंदेमातरम् गीत

# की

# सत्यता इतिहास के आईने में


लेखक व संकलन कर्ता

**एम० एस० बहराइची**



मुस्लिम सियासी बेदारी फोरम

1st फ्लोर-5, जैद अपार्टमेंट, जी० पी० रोड, मोलवीगंज, लखनऊ

मो० : 09918133465

# राष्ट्र विरोधी उपन्यास आनन्द मठ व वंदेमातरम् गीत की सत्यता इतिहास के आईने में

लेखक व संकलन कर्ता

एम0 एस0 बहराइची

मूल्य 20/–

मुस्लिम सियासी बेदारी फोरम
1st फ्लोर–5, ज़ैद अपार्टमेंट, जी0 पी0 रोड, मोलवीगंज, लखनऊ
मो0 : 09918133465

## दो शब्द

"वंदे मातरम" पर दिये गये फतवे को लेकर सुप्रसिध्द धार्मिक शिक्षा संस्थान "दारूल उलूम देवबंद" के विरूद्ध हिन्दुत्व वादियों द्वारा दारूल उलूम का पुतला फूँके जाने का जो ताण्डव सरकार व प्रशासन की छत्रछाया मे उ0 प्र0 के जिला सहारनपुर मे कई सप्ताह तक जारी रहा।वह बडी दुखद घटना थी। जिसकी आँच से सम्पूर्ण देश का भारतीय मुसलमान चिन्तित व कुंठित था।

चिन्ता का विषय यह था कि जिस दारूल उलूम के संस्थापको एवं समर्थकों ने देश की आजादी मे बढ चढ कर हिस्सा लिया था। उन ही के देश प्रेम पर यदि प्रश्न चिन्ह लगाया जा रहा है,तो साधारण मुसलमानों का क्या होगा ? सबसे ज्यादा दुखद बात यह थी कि यह आरोप वह लोग लगा रहे है. जिनके पूर्वज अंग्रेज समर्थक थे। जिनकी स्वतंत्रता संग्राम मे कोई भूमिका भी नही रही थी। आनन्द मठ उपन्यास इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

इन ही परिस्थिति वश ईश्वर ने मेरे दिल में यह विचार उत्पन्न किया कि इस विषय पर कुछ लिखा जाय। गीत व उपन्यास एवं हिन्दुत्व वाद की सत्यता को उजागर किया जाय। मुसलमानो के प्रति फैलायी जा रही भ्रन्तियों को दूर किया जाय। राष्ट्र भक्तों की दूषित मानसिकता पर प्रकाश डाला जाए। उनकी राष्ट्र भक्ति पर भी प्रश्न चिन्ह लगाये जाये। प्रस्तुत पुस्तक इसी विषय पर आधारित है।

ईश्वर की कृपा और उसकी दी गयी क्षमता जो उसने मुझे प्रदान की उसके हम कृतज्ञ व आभारी हैं।

एम0 एस0 बहराइची
536 / 334 मदेहगंज
सीतापुर रोड लखनऊ

6 दिसम्बर-2009 ई0



"वन्दे मातरम गीत" सदैव से विवादित रहा है। यह कितना बहुत पुराना है जो समय समय पर अनेक अवसरो पर उठाया जाता रहा है। ऐसे कितने की वास्तविकता से नई नस्ल का अवगत होना इसलिए जरूरी है कि यह भविष्य मे फिर उठाया जा सकता है।

"वन्दे मातरम" गीत प्रसिद्ध बंगाली ब्रहमण बंकिम चन्द्र चटर्जी के राष्ट्र विरोधी उपन्यास "आनन्द मठ" का हिस्सा है,जो मुस्लिम दुश्मनी की आड ले कर अंग्रेजों के समर्थन में लिखा गया। प्रो0 ताहिर महमूद के अनुसार, यह गीत संस्कृत और बंगाली भाषा के मिले जुले शब्दो पर आधारित है,जिसे देश का अधिकांश शिक्षित वर्ग भी समझता नहीं है। (16 नवम्बर 2006 ई0 राष्ट्रीय सहारा उर्दू) ऐसे गीत को राष्ट्रीय गीत का दर्जा देने के पीछे क्या मानसिकता काम कर रही है ? इसे समझने की जरूरत है। इस उपन्यास और वन्दे मातरम गीत पर प्रकाश डालने से पहले बंगाल की ऐतिहासिक पृष्ठिभूमि का समझना जरूरी है। इस पृष्ठिभूमि को समझे बिना आनन्द मठ और वन्दे मातरम गीत की थीम का समझना मुश्किल है।

## नवाब और ईस्ट इंडिया कम्पनी

यह बात सभी जानते हैं कि अंग्रेजों ने ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना बंगाल में की थी। उन्होंने सोच समझ कर कलकत्ता मे डायमण्ड हार्बर और फोर्ट विलियम को अपना हेडक्वाटर बनाया था. ताकि समुद्री मार्ग से उन्हें सहायता मिलती रहे और पूरे हिन्दुस्तान पर कब्जा किया जा सके।

नवाब सिराजुददौला के नाना अली वरदी खाँ ने इस खतरे को महसूस किया। उन्होने 1754 ई0 मे फोर्ट विलियम पर हमला कर के अंग्रेजों को भगा दिया। अंग्रेज डायमंड हार्बर मे पनाह लेने पर मजबूर हुए। अली वरदी खाँ के निधन के बाद जब सिराजुददौला ने सत्ता संभाली, तो अंग्रेज अपनी राजनीतिक गोटें बिछाने लगे। अंग्रेजों ने चंद वर्षो के अन्दर लोभ व लालच देकर नवाब के राज दरबारियों और वहाँ के सेठ साहूकारों को अपना हितैषी बना लिया। सेठ अमीचन्द, मीर जाफर जैसे गददार अंग्रेजों से मिल गये।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने जब कलकत्ता में कोठियाँ बनानी शुरू की, तो नवाब ने इसका विरोध किया। अंग्रेजों और नवाब में इसी बात को लेकर युद्ध हुआ। नवाब की पराजय और शहादत के बाद, चूँकि अंग्रेजों ने राज सत्ता मुस्लिम नवाब से छीनी थी इसलिये उन्होंने मुसलमानों को हर स्तर पर कमजोर करने की कोशिशें की। मुसलमानों ने भी अंग्रेजी सरकार के साथ असहयोग का तरीका अपनाया। असहयोग के इस तरीके ने उन्हें धीरे–धीरे और कमजोर व पीछे कर दिया।

## सवर्ण हिन्दुओं की अंग्रेजों से निकटता

सवर्ण हिन्दुओं का एक वर्ग मुसलमानों के प्रति घृणित मानसिकता मुस्लिम शासकों के दौर से ही रखता था। इस वर्ग ने मौके को गनीमत जान कर अंग्रेजों से अपनी निकटता बनाई। अंग्रेजों ने भी उन्हें राजनीतिक, शैक्षिक एवं आर्थिक सभी प्रकार की सुविधायें दीं, और प्रशासन में उच्च पद प्रदान कर के उन्हें अपने से बहुत निकट कर लिया। कम्पनी की सहमति व समर्थन से हिन्दू भूमिहारों ने शूद्रों और विशेष कर मुसलमानों के शोषण के लिये 1838 ई0 में 'जमींदार सोसाइटी' और 1842 ई0 में 'बंगाल ब्रिटिश इण्डिया सोसाइटी' की स्थापना की। इन्हीं कारणों से बंगाली हिन्दू कम्पनी को अपना मुक्ति दाता समझने लगे।

प्रो0 बी0 एल0 ग्रोवर हेड आफ दि डिपार्टमेंट हिस्ट्री हंसराज कॉलेज देहली यूनिवर्सिटी का यह कथन इस बात की पुष्टि करता है कि– "बंगाली हिन्दुओं ने अंग्रेजों को मुस्लिम नवाबों के मुकाबले अपना मुक्ति दाता समझा। जबकि महाराष्ट्र के लोगों ने अंग्रेजों को ज़ालिम और मुल्क के हुक्मरानों को हटाने वाला समझा"।

(दावत देहली 7 दिसम्बर 2006ई0)।

## मुसलमानों के पिछड़ने का कारण

इस प्रकार बंगाली हिन्दू अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण कर मुलाजमतों में घुसते गये, और मुसलमान असहयोग की राह पर चलते रहे। उन्होंने न अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण की, और न ही उनकी मुलाजमत प्राप्त की। यद्यपि बंगाल में मुसलमान तादाद के लिहाज से 50 प्रतिशत से अधिक थे। लेकिन अनेकों कारणों से वह शैक्षिक, राजनीतिक व आर्थिक ऐतबार से



बहुत पीछे चले गये थे। 1857 ई0 के स्वतंत्रता आन्दोलन की नाकामी ने मुसलमानों को और गम्भीर स्थिति में ला खड़ा किया। पब्लिक लाइफ या सरकारी मुलाजमतों में वह यदा–कदा नजर आते थे। हिन्दू भूमिहार मुसलमान किसानों का शोषण कर रहे थे। उनके साथ जरखरीद गुलाम जैसा व्यवहार करते थे। कई बार मुसलमान किसानों ने विद्रोह और बगावत भी की, लेकिन बंगाल की जमींदार सोसाइटी ने अंग्रेजों से मिल कर उन्हें कुचल दिया।

## सवर्ण हिन्दुओं के एक वर्ग की मुसलमानों से घृणा

भारतीय इतिहास के हर युग में यहाँ एक वर्ग ऐसा मौजूद रहा है। जिसने अपनी जातीय श्रेष्ठता और धार्मिक कट्टरता के कारण देश के मुसलमानों और उनके धर्म इस्लाम को देश के लिए एक बोझ और मुसीबत समझता रहा। क्योंकि वह शूद्रों और दूसरी जातियों की तरह शोषण पर आधारित वर्ण व्यवस्था का हिस्सा बनने को तैयार नहीं हुआ। इस्लाम सामाजिक समानता का पक्षधर है। इसलिए इस्लाम और मुसलमानों का वजूद उनकी मुसीबत का कारण था।

वह जिन शूद्र जातियों को मानवीय अधिकारों से वंचित रखे हुए थे। जिनके शोषण को वह अपना पुस्तैनी अधिकार समझते थे और जिनसे सदियों से गुलामी के कार्य लिये जाते रहे थे। वह जातियाँ ऊँच–नीच, छूत–छात व शोषण के उत्पीडन से परेशान हो कर उस समय में भी जब कि मुसलमान कमजोर हालत में थे, धर्म परिवर्तित करती रहती थीं। धर्म परिवर्तन की इन छुट–पुट घटनाओं से इस वर्ग विशेष का उत्तेजित होना स्वभाविक था। जैसे आज धर्म परिवर्तन की छुट पुट घटनाओं पर संघ परिवारी उत्तेजित हो उठते हैं। उसी प्रकार उनका भी वही हाल था। इसी कारण वह मुसलमानों से द्विवेष व घृणा रखने को मजबूर थे। बंकिम चन्द्र इसी वर्ग विशेष से सम्बन्ध रखता था। उसने अग्रेजों के शासन और उस समय के माहोल को अपनी सोच के मुताबिक पाकर राष्ट्र विरोधी उपन्यास "आनन्द मठ" की रचना की।

## लेखक का परिचय व गीत का आरम्भ

बंकिम चन्द्र 1838 ई0 में पैदा हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद उसने बी0 ए0 तक की शिक्षा " हाजी मोहसिन फण्ड"की सहायता और उसके

द्वारा जारी वजीफे से प्राप्त की। वह देश प्रेमी और नेश्नलिस्ट नहीं था। वह अंग्रेज साम्राज्य का वफादार एजेन्ट था और कट्टर मुस्लिम दुश्मन था। 1857 ई0 के स्वतंत्रता आंदोलन के तुरन्त बाद 1858 ई0 में अंग्रेज सरकार ने उसे पहला हिन्दुस्तानी डिप्टी कलेक्टर बनाया था। जो कलेक्टर होकर 1891 ई0 में रिटायर हुआ।

बंकिम चन्द्र अंग्रेज सरकार का प्रबल समर्थक और प्रशंसक था। वह बड़ा अवसर वादी था। अपनी वफादारी को साबित करने के लिए मौके की तलाश में रहता था। इसी उद्‌देश्य को लेकर 1876 ई0 में जब महारानी विक्टोरिया को 'कैसरे हिन्द' की उपाधि दिये जाने की घोषणा हुई, और लार्ड लिटिन ने उसके लिये एक समारोह का आयोजन किया, तो बंकिम चन्द्र के दिल में इस अवसर से लाभ उठाने का विचार उत्पन्न हुआ। उसने सोचा कि उनकी प्रशंसा में कुछ लिखा जाये। इस प्रकार वन्दे मातरम गीत की शुरूआत हुई और पहली बार यह गीत 'बंगा दर्शन पत्रिका' में प्रकाशित हुआ।

## आनन्द मठ में गीत का विस्तार

राजेन्द्र शर्मा ने अपने एक लेख 'बन्दे मातरम राष्ट्र गीत नहीं दुर्गा की पूजा का गीत है' में लिखते हैं कि–बंकिम चन्द्र ने वंदे मातरम की रचना 1876 ई0 में की थी।हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार –इसकी शुरूआत दुर्गा की स्तुति के रूप में हुई लगती है। 1882 ई0 में बंकिम ने अपने उपन्यास आनन्द मठ में इसे जोड दिया। इसी क्रम में उन्होंने इस गीत का विस्तार भी किया। यहाँ आकर इस गीत ने (जो केवल बंगाल का ही प्रतीक था) भारत भूमि के प्रतीक का रूप ले लिया। लेकिन यह प्रतीक किस भारत भूमि का था ? इसे आनन्द मठ से ही समझा जा सकता है। जिसमें इसे राष्ट्रीय विद्रोह के प्रयाणगीत का स्थान दिया गया है।

बंकिम चन्द्र ने राष्ट्रीय विद्रोह के प्रतीक के रूप में 100 साल पहले के "सन्यासी विद्रोह" को उसके साथ–साथ चल रहे "फकीर विद्रोह" से काट कर चुना था। इतना ही नहीं उन्होंने इन सौ वर्षों के दौरान खुद बंगाल के विभिन्न हिस्सों में चले "टीटू मीर" के नेतृत्व वाले "वहाबी विद्रोह" "फराजी आन्दोलन" "संथाल विद्रोह" आदि और 1857 ई0 के



राष्ट्रीय विद्रोह के ब्रिटिश विरोधी स्वरों को अनसुना करते हुये, अपनी कल्पना को मुस्लिम विरोध के रूप में मूर्तिमान किया था। वन्दे मातरम ऐसे ही राष्ट्रीय विद्रोह का जय गान था।

(नव भारत टाइम्स,6 दिसम्बर 2006 ई0 व 17 सितम्बर 2006 ई0 साप्ताहिक कान्ति देहली)

सुप्रसिद्ध लेखक गिरधर राठी ने सम्भवता ऐसे ही राष्ट्रीय विद्रोह का जयगान करने वालों के बारे में लिखा है कि –"स्वतंत्रता आंदोलन के समय ये लोग अंग्रेजों के भक्त थे,और स्वतंत्रता आंदोलन के विरोधी थे। ये लोग केवल हिन्दू समाज को कट्टर बनाने में जुटे थे"। सुप्रसिद्ध लेखक व पत्रकार प्रभाष जोशी लिखते हैं कि –"हेडगवार 1925 ई0 से 1940 ई0 तक सरसंघ चालक रहे और आजादी मिलने तक गोलवालकर रहे। इन 22 वर्षों में आजादी के अंदोलन में संघ ने कोई योगदान या सहयोग नहीं किया। हिन्दू राष्ट्र के लिए मर मिटने वाले सेवकों का केवल संगठन बनाते रहे"।

(25 नवम्बर,2009 ई0 राष्ट्रीय सहारा,लेख ,आजाद भारत का इतिहास )

राजेन्द्र शर्मा ने अपने लेख के अन्त में रवीन्द्र नाथ टैगोर का कथन कोड किया है कि–"वंदे मातरम का हृदय देवी दुर्गा की स्तुति है। यह इतना स्पष्ठ है कि इस पर कोई बहस नहीं हो सकती। किसी भी मुसलमान से यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह स्वदेश के प्रतीक के रूप में दश भुजाधारी मूर्ति की देश भक्ति की भावना से पूजा करेगा"।

(नव भारत टाइम्स 6 दिसम्बर 2006 ई0 व 17 सितम्बर 2006 ई0 साप्ताहिक कान्ति देहली)

आज इस गान को राष्ट्रगीत का दर्जा देकर, हर किसी को गाने के लिए, बाध्य किये जाने के जो ओछे प्रयास किये जा रहे हैं। वह देश और समाज के हित मे नहीं है। सुप्रसिद्ध दार्शनिक व लेखक त्रिवसी चौधरी ने "एक गुमनाम हिन्दुस्तानी की खुद नविश्त" में आनन्द मठ लेखक के बारे में लिखा है कि– "चटर्जी स्पष्ट तौर पर कट्टर मुस्लिम दुशमन थे" सुप्रसिद्ध इतिहासकार आर0 सी0 मजूमदार ने उपन्यास की इन शब्दों में समीक्षा की है कि –"आनन्द मठ के प्लाट और उसमें काली माता की एमेजरी से स्पष्ट होता है कि– चटर्जी की वतन परस्ती हिन्दुस्तान से ज्यादा हिन्दू मत से ग्रसित थी। उनकी अनेक पुस्तकें भी मुस्लिम हुकूमत के खिलाफ उनके जजबाती आवेश का सूचक हैं।

उन्होंने हुब्बुल वतनी को मजहब और मजहब को हुब्बुल वतनी के समकक्ष करार दिया है"। (दावत देहली 7 दिसम्बर 2006 ई0)

## एक दृष्टि आनन्द मठ पर

आनन्द मठ उपन्यास फर्जी किरदारों पर आधारित है। इस उपन्यास का मूल चरित्र एक ब्राहमण सन्यासी है। जिसका नाम भुवानन्दा है। जो हिन्दुओं को मुसलमानों के खिलाफ उकसाता है। वह अपने दूसरे साथी महेन्द्र से कहता है कि –हमारा धर्म खतरे में है। हमारी जाति खतरे में है। हमारी प्रतिष्ठा मान सम्मान खतरे में है। और यह कि जब तक मुसलमान मुल्क में रहेंगें हम कभी सर उठा कर नहीं जी सकेंगे।

महेन्द्र के इस सवाल के जवाब में, कि क्या तुम अकेले मुकाबला करोगे? भुवानन्दा कहता है कि—— जब तीस करोड़ लोगों की जोश भरी आवाजें बुलन्द होंगी, और साठ करोड़ बजुओं में लहराती तलवारें होंगी । क्या तब भी मेरी माता कमजोर होगी? महेन्द्र को जब उसके इस जवाब से संतुष्टि नहीं होती, तो वह उसे आनन्द मठ मन्दिर ले जाता है। जहाँ दुर्गा और काली की मूर्तियों के सामने उसकी भावनाओं को उत्तेजित करता है और जोश दिलाता है।

एक साथी कहता है कि—भुवानन्द ने कह दिया था। भाई ! अगर किसी घर में एक तरफ हीरे जवाहेरात रुपया पैसा देखो और दूसरी तरफ टूटी फूटी बन्दूक देखो तो हीरे जवाहेरात रुपया पैसा से नजर हटा कर वह टूटी बन्दूक ही साथ ले कर आना ।

इसके अलावा एक जगह लिखा है कि– उन्होंने गाँव–गाँव में खोजी दस्ते भेजे –खोजी लोग जिस गाँव में हिन्दू देखते, कहते। "विष्णु पूजा करोगे"? यह कह कर 20–25 आदमी साथ लेकर मुसलमानों के गाँव में आते और उनके घरों में आग लगा देते । मुसलमान अपनी जान बचाने के लिए भागते। सन्तान अर्थात (साधू सन्तों) का टोला उनका सब कुछ लूट कर नये विष्णु भक्तों में वितरित कर देते। लूट का माल पाकर गाँव वाले खुश हो जाते, तो उन्हें मन्दिर में लाकर सन्तान बनाया जाता। लोगों ने देखा सन्तान बनने में खूब लाभ है। इस प्रकार हजारों सन्तान भुवानन्द जीवा नन्द के चरणों को छूने के लिए आ पहुँचती।



________जहाँ मुसलमानों का गाँव पाते आग लगाकर उसे भस्मी भूत कर देते।

इतना ही नहीं इस उपन्यास के दूसरे दृश्य में हिन्दुओं को मुसलमानों का कत्ल आम करते दिखाया गया है। जो वन्दे मातरम का नारा लगाते हुए आपस में सवाल करते हैं कि——वह दिन कब आयेगा जब हम मुसलमानों की मस्जिदों को ढाकर राधा माधव का मन्दिर बनायेंगे। हम मुस्लिम मलेक्षों को इस जमीन से निकाल देंगे। यह देवताओं के दुश्मन हैं। भाइयो ! मुसलमानों को कत्ल कर डालो।

उपन्यास का एक चरित्र एक दूसरे महत्तव पूर्ण चरित्र—सत्यानन्द को सम्बोधित करते हुए कहता है—आज मुसलमानों की खुली पराजय हुई है। और इस तरह तुम्हारा उद्देश्य पूरा हो गया। मुसलमानों को पराजित करने के इस परिदृश्य में मुस्लिम विरोधी संस्था–सन्तान का जुनूनी हिन्दू गिरोह वन्दे मातरम गाता है। अंग्रेजों का स्वागत करते हुए भुवानन्द अपने साथी से कहता है कि–अब हमारी जान को अमान मिलेगी । क्यों कि अब मुगल हुक्मुरों की जगह अंग्रेज आ गये।

इतिहासकार आर0 सी0 मजुमदार के अनुसार "आनन्द मठकी मूल भूत परिकल्पना उन सन्यासी बच्चों पर केन्द्रित है,जिन्होंने अपने घर त्याग कर, अपने जीवन को मातृभूमि (बंगाल) के लिए समर्पित कर दिया था। वह मातृभूमि को काली माँ के रूप में पूजते थे"।

बंकिम चन्द "आनन्द मठ" में एक जगह लिखते हैं कि———इस एक रात में ही गाँव–गाँव और शहर–शहर में शोर मच गया । सभी कह रहे थे मुसलमान हार गये। देश दुबारा हिन्दुओं का हो गया। सभी एक बार बुलन्द आवाज में हरि–हरि बोलो। गाँव के लोग मुसलमानों को देखते ही उन्हें मारने को दौड़ते। कोई–कोई इस रात दल बना कर मुसलमानों के महल्ले में गया, और उनके घरों में आग लगा कर सब कुछ लूटने लगा। कई लोग मारे गये। बहुत से मुसलमानों ने दाढ़ी मुँड़्वा ली, और बदन पर मिट्टी मल कर हरि नाम का जाप करना शुरु कर दिया। पूछने पर कहते हम हिन्दू हैं। बड़ी तादाद में मुसलमान शहर की तरफ भागने लगे ।

उपरोक्त उद्धरणों से आप समझ सकते है कि बंकिम चन्द किस मानसिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। वन्दे मातरम से उसका बुनियादी

मकसद क्या था ? यह गीत दरअसल दुर्गा का गीत है। जिसे माता कहा गया है। बंकिम चन्द्र ने बाद को दुर्गा देवी को (केवल बंगाल )के रूप में प्रस्तुत किया । गीत का पाँचवा बंद इसका ज्वलंत प्रमाण है।

उपन्यास में भुवानन्द कहता है कि–जब तीस करोड़ आवाज और साठ करोड़ बाजुओं में लहराती तलवारें होंगी तो क्या तब भी मेरी माता कमजोर होगी ?

उर्दू राष्ट्रीय सहारा के चीफ एडीटर अजीज बर्नी के अनुसार –"सम्पूर्ण उपन्यास में बीच–बीच में वन्दे मातरम की गूँज किस बात का संकेत देती है ? क्या यह मुसलमानों के कत्ल आम के बाद का नारा नहीं है ? क्या मुसलमानों की मस्जिदों को तहस नहस करने के बाद यह गीत क्या सफलता के जश्न का संकेत नही देता है" ?

(22 नवम्बर 2009 ई0,आजाद भारत का इतिहास,उर्दू राष्ट्रीय सहारा)

इन समस्त तथ्यों के बाद भी, अब यदि कुछ लोग इस गीत के गाये जाने को राष्ट्रीय दायित्व बताते हैं, और कहते हैं कि इसमें देश की प्रशंसा की गयी है। वह वास्तविक तौर पर अपनी अन्तरात्मा को धोखा दे रहे हैं, और दूसरों को भी धोखे में रखने की कोशिश कर रहे हैं।

## इस्लाम की शिक्षा के विरूद्ध

झारखंड प्रांत के एक मुस्लिम लेखक एम0 ए0 बारी खाँ ने वंदे मातरम और मुसलमान, शीर्षक से लिखे गये अपने लेख में इस गीत की ग्यारह ऐसी विशेषताओं का वर्णन किया है। जो इस्लामी शिक्षा के पूर्णतया विरूद्व है।

1–सुख देने वाली 2–बरकत देने वाली 3–हमारे बाजुओं की ताकत 4–तू ही मेरा ज्ञान है 5–तू ही मेरी आत्मा है 6–तू ही मेरा मकसद है 7–तू ही जिस्म के ऊपर की जान है 8–दिलों के अन्दर तेरी ही हकीकत है 9–कायम व दायम है 10–मुकददस है 11–बडी कुदरत वाली है। (दावत देहली ,17 दिसम्बर 2006 ई0)

मौलाना इसरारूल हक कासमी अपने एक लेख में लिखते हैं कि –"वन्दे मातरम के सम्बन्ध में अब तक जितने हिन्दू विद्वानों के विचार मेरे समक्ष आये हैं उनमें हर एक ने इसका अर्थ –ऐ मादरे वतन मैं तेरा उपासक हूँ। सुप्रसिद्व पत्रकार सुरजीत दास ने लिखा है कि –नि.संदेह



वन्दे मातरम गीत में मादरे वतन की इबादत गुजारी है। श्री अरविन्दू ने इसका जो अनुवाद किया है,उसके मुताबिक–ऐ मादरे वतन मैं तेरे आगे सिजदा करता हूँ"। (राष्ट्री सहारा उर्दू, 16 नवम्बर 2009 ई0)

## गीत गाने की अनिवार्यता संविधान के विपरीत

प्रो0 ए0 जी0 नूरानी जो प्रसिध्द विधिवेत्ता हैं उन्होंने वैधानिक दृष्टिकोण से इस गीत पर प्रकाश डाला है। वह अपने लेख –"कितना सेक्यूलर है वन्दे मातरम" ? में लिखते हैं कि – "वन्दे मातरम के गाने की अनिवार्यता भारतीय संविधान की धारा 28 (1) और (3) के विपरीत है। पहली धारा में कहा गया है कि सरकारी धन से चलने वाले विद्यालयों को किसी भी तरह का धार्मिक निर्देश नहीं दिया जा सकता । दूसरी धारा में कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति जो इस तरह के विद्यालयों में अध्ययन करता है। वह उस संस्थान के परिसर में आयोजित किसी धार्मिक प्रार्थना में भाग लेने के लिए बाध्य नहीं है। संविधान में दिया गया यह प्राविधान पूरी तरह स्पष्ट है।

सुप्रीम कोर्ट भी यह व्यवस्था दे चुका है कि किसी भी व्यक्ति को राष्ट्रीय गान गाने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता । स्वाभाविक रूप से यह बात राष्ट्रीय गीत पर भी लागू होती है। भाजपा के लोग कहते हैं कि, वंदे मातरम में किसी तरह का धार्मिक अंश नहीं है। यह पूरी तरह असत्य है"। (आजाद भारत का इतिहास 24 नवम्बर 2009 ई0 उर्दू राष्ट्रीय सहारा )

इन समस्त तथ्यों से यह बात पूर्णतया स्पष्ट हो जाती है कि आनन्द मठ और वंदे मातरम दोनों का किरदार बुत परस्ताना और असंवैधानिक है।

## बंगाल विभाजन से गीत की चर्चा

आनन्द मठ का यह गीत सदैव से विवादित रहा है। बंकिम चन्द्र के देहान्त के दो वर्ष बाद 1896 ई0 में इस गीत को रवीन्द्र नाथ टैगोर ने संगीत बद्व किया था। जिसे उन्होंने कॉंग्रेस के अधिवेशन में गाया भी था। फिर यह गीत 1896 ई0 से 1904 ई0 तक ऐसा विलुप्त हुआ कि कहीं भी इतिहास के पृष्ठों में इसका वर्णन नहीं मिलता । परन्तु 1905 ई0 में बंगाल विभाजन पर यह गीत फिर चर्चित हुआ।

हम पिछले पृष्ठों में लिख चुके हैं कि जमींदार सोसाइटी और

ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी की स्थापना मुसलमानों के शोषण और उन्हें कमज़ोर करने के उद्देश्य से की गयी थी। मुसलमान पीड़ित थे। वह अपनी सामाजिक व आर्थिक दशा सुधारना चाहते थे। इसी उद्देश्य को लेकर उन्होंने अनेक बार अंग्रेज़ सरकार से प्रार्थना की. कि वह मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों को अलग कर दे ताकि जम्हूरी उसूलों पर हम अपनी हालत स्वयं सुधार सके।

मुसलमानों की यह माँग जायज़ बुनियादों पर थी इसलिए अंग्रेज सरकार ने मुसलमानों की इस माँग को मान लिया। इस माँग के मनवाने में नवाब सलीम उल्ला ने अहम भूमिका निभाई थी। इस प्रकार 1905 ई0 में मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों और हिन्दू बाहुल्य क्षेत्रों को अंग्रेज़ों ने अलग–अलग बाँट दिया। इस फैसले पर समाज का शोषण करने वाले हिन्दू बंगाली क्रोधित हो उठे। उन्होने हंगामा बरपा कर दिया। टैगोर ने भी छोटी–छोटी कवितायें लिख कर बंगाल विभाजन के विरूद्ध शोर मचाया. और बंकिम चन्द्र के गीत के द्वारा हिन्दुओं को मुसलमानों के खिलाफ उभारा । इस प्रकार कॉंग्रेस और बंगाली हिन्दुओं ने अंग्रेज़ सरकार को अपना फैसला निरस्त करने पर मजबूर कर दिया. और मुसलमानों की नाराज़गी का कुछ ख्याल न किया।

(दावत देहली–7 दिसम्बर 2006 ई0)

बाद को अंग्रेज़ सरकार ने नवाब सलीम उल्ला की दिल शिकनी दूर करने के लिए उन्हें आई0 ए0 एस0 का खिताब दिया। उस समय की राजनीतिक व समाजिक परिस्थितियों को देखते हुए ,बहुत सोच विचार के बाद उन्होंने खिताब व तमगा तो ले लिया। लेकिन बबाँगे दहल यह घोषणा भी कर दी कि–''यह तमगा मेरे लिए एक रिश्वत है। मेरी गर्दन में ज़िल्लत व लानत का एक तौक है''।

(जिक्र इकबाल,लेखक अ0 मजीद सालिक–पृष्ठ–98)

इस घटना से यह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि उस समय मुसलमान किन परिस्थितियों से गुज़र रहे थे।

बंगाल विभाजन को रद करने के बाद ,अंग्रेज सरकार ने 1932 ई0 में मुसलमानों को उनकी जनसंख्या के लिहाज से नुमाइन्दगी देने की घोषणा की। मुसलमान जो 54 प्रतिशत थे उन्हें 47 सीटें मिलीं.और



हिन्दू जो 44 प्रतिशत थे उन्हें 32 सीटें मिलीं। अग्रेज़ों के इस फैसले के विरूद्ध भी रवीन्द्र नाथ टैगोर आदि ने अंग्रेज़ सरकार और मुसलमानों के विरूद्ध जहरीला प्रचार करके देश के वातावरण को विषाक्त कर दिया। इस प्रकार वन्दे मातरम गीत फिर चर्चित हुआ।

(दावत देहली.7 दिसम्बर 2006 ई0)

## टैगोर का पत्र नेता जी के नाम

1937 ई0 में जब उ0 प्र0 में कॉंग्रेस **ने** अपनी सरकार बनाई तो उसने ''वन्दे मातरम'' गाने पर जोर दिया। विरोध में सदन के (कॉंग्रेसी,लीगी) समस्त मुस्लिम सदस्यों ने इस्तीफा दे दिया। इस विरोध के बाद कॉंग्रेस ने एक कमेटी गठित की । जिसमें जवाहर लाल नेहरू नरेन्द्र डे और मौलाना आज़ाद आदि शामिल थे. परन्तु यह कमेटी किसी नतीजे पर न पहुँच सकी। बाद को कहा जाने लगा कि केवल एक वंद के गाये जाने का फैसला हुआ था। इसमें कितनी सत्यता है? इसे खोजने की जरूरत है।

कहा जाता है कि ,उसी समय रवीन्द्र नाथ टैगोर पर जब इस गीत की वास्तविकता उजागर हुई. तो उन्होंने नेता जी सुभाष चन्द्र बोस को एक पत्र लिखा कि ––––''इस गीत का मूल तत्व दुर्गा देवी की स्तुति है। यह इतना स्पष्ट है कि इस पर किसी भी प्रकार की बहस मुमकिन नहीं है। बेशक बंकिम ने दुर्गा को संयुक्त बंगाल की निशानी के तौर पर पेश किया है। मगर किसी मुसलमान से यह आशा नहीं की जानी चाहिए. कि वह हुब्बुल वतनी के नाम पर दस हाथों वाली दुर्गा की ईबादत करे।

आनन्द मठ उपन्यास एक सहित्यिक रचना है। उसके लिए यह गीत ठीक हो सकता है। परन्तु सदन प्रत्येक धर्म के लोगो के मिलने की जगह है। इस लिए यह गीत वहाँ के योग्य नही हो सकता। जब बंगाल के मुसलमान इसके विरूद्ध अवाज उठाते हैं तो हम लोग उसको सहन नहीं कर पाते। परन्तु जब हम लोग उनसे अप्रत्याशित माँग करते हैं,तो उससे अपनी हार होती है। बंगाली हिन्दू इस मामले में बहुत उत्तेजित नजर आते है। लेकिन यह केवल हिन्दुओं की समस्या नहीं है। दोनों ओर शदीद एहसासात हैं। इसलिए एक सन्तुलित रास्ता अपनाने की

जरूरत है। हमें अपने राजनितिक उद्देश्य के लिए अमन और भाई चारे की जरूरत है। इस लिए हम लोगों को किसी की माँग को दूसरे पर थोपने की न खत्म होने वाली लडाई में नहीं पडना चाहिए"। (रवीन्द्रनाथ टैगोर के मुंतख्बा खुतूत,,मतबुआ कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी, 7दिसम्बर 2006 ई0 दावत देहली)

## अन्य लोगों के विचार

टैगोर ने पत्र तो लिखा ही। साथ ही स्पष्ट शब्दों में विरोध भी किया,और कहा कि–"यह गीत सिक्खों ईसाइयों और मुसलमानों के धार्मिक अकीदे (विश्वास) के विरूद्ध है। इसलिए इसे राष्ट्रीय गीत नहीं बनाना चाहिए"। इस सिलसिले में महात्मा गाँधी ने भी मुसलमानों के दृष्टिकोण का समर्थन किया था। नेता जी सुभाष चन्द बोस बंगाली होने के बावजूद इस गीत के विरोधी थे। उनकी "आजाद हिन्द फौज" का नारा "जय हिन्द" था। उस समय की आल इंडिया स्टूडेन्ट यूनियन ने भी इसका विरोध किया और इसे छात्रों के समारोह में पढने को उचित नहीं समझा।

मौलाना आजाद ने भी कभी इस गीत का समर्थन नहीं किया। जमीतुल उलमा ने उस समय भी इस गीत का विरोध किया था। सुप्रसिद्व समाजवादी नेता डा0 राम मनोहर लोहिया जो उस समय कॉंग्रेस मे थे, कहा था कि–"आनन्द मठ उपन्यास हिन्दुस्तान की कौमी तहरीक पर एक बदनुमा दाग है। इसमें एक वाक्य– अब अंग्रेज आ गये हैं। अब हमारे जान व माल की सुरक्षा होगी । हमारी कौमी तहरीक के लिए शर्मनाक है"। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती मूर्ति पूजा और बुत परस्ताना गानों और भजनों के कटटर विरोधी थे। क्या वह देश द्रोही थे ? क्या उन पर भी यह नारा फिट किया गया था कि "भारत में यदि रहना है,तो वन्दे मातरम कहना है"और क्या उन्होंने भारत में रहने के लिए वन्दे मातरम का गान किया था ?

सुप्रसिद्व इतिहासकार सुमित कुमार ने इस गीत के सम्बन्ध में एतिहासिक प्रमाणों का सहारा लेते हुए (31 अगस्त 2006 ई0 टाइम्स आफ इंडिया) में प्रकाशित अपने लेख में लिखा है कि ––––"1929 ई0 में भगत सिंह और उनके क्रान्तिकारी साथियों ने मजदूर दुश्मन कानून के



विरूद्व जब सेन्ट्रल एसेम्बली में बम फेंका तो उन्होंने वन्दे मातरम नहीं कहा। इनकिलाब जिन्दा बाद का नारा लगाया था। फाँसी पर लटकने वाले राम प्रसाद बिस्मिल अशफाक उल्ला खाँ और भगत सिंह आदि का इनकिलाब जिन्दाबाद का नारा क्या देश भक्ति पर आधारित नहीं था ?

## अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसका प्रभाव

उपरोक्त विचारों के आधार पर किस प्रकार आनन्द मठ के इस गीत को राष्ट्रीय गीत माना जा सकता है ? यदि इसे राष्ट्रीय गीत मान भी लिया जाय,तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा ? यह सोचने और चिन्तन करने का विषय है। राष्ट्रीय गीत होने की दशा में यदि इस गीत का गाया जाना हर देश वासी पर अनिवार्य कर दिया जाए ,तो इस परिस्थिति में यूरोप व अमेरीका आदि देशों में रहने वाले भारत वासी जिन्होने उन देशों की भी नागरिकता प्राप्त कर ली है। जब अपने कौमी दिन पर एकत्रित हो कर भारत की धरती को पूजने की प्रतिज्ञा करेंगे,तो फिर क्या उनकी यूरोप व अमरीका आदि देशों की नागरिकता शंकाओं से प्रभावित न होगी ? फिर क्या वह उस समाज में अच्छी दृष्टि से देखे जा सकेंगे ?

यह प्रश्न विचार व चिन्तन करने का है। क्योंकि हर देश में कुछ शरारती तत्व होते हैं । जो किसी मामूली बात को तिल का ताड बनाने में बडी महारत रखते हैं। जैसे हमारे देश के संघ परिवारी। ऐसे ही लोग विदेश मे रहने वाले भारतीय नागरिकों के लिए समस्या खडी कर सकते हैं। वह यह भी कह सकते हैं कि यदि मातृभूमि भारत माता की पूजा या प्रशंसा करते हो, तो अपने देश पिता अमेरीका जहाँ की नागरिकता तुमने प्राप्त की है। उसकी भी प्रशंसा व पूजा करो।

## भारत माता शब्द की उत्पत्ति

हमारे देश के बहुदेव वादी मूर्ति पूजा में विश्वास रखते हैं। इसी कारण से वह हर किसी की मूर्ति बना कर या सामने तस्वीर रख कर ही उसे मान सम्मान व श्रद्धाजलि अर्पित करते है। बिना मूर्ति या तस्वीर के उन्हें संतुष्टि नहीं होती। देवी देवताओं की पूजा अर्चना मूर्ति के बिना कैसे ? देश के महापुरूषों के जन्म दिन का अवसर हो या मृत्यु का चाहे वह गाँधी हो या अम्बेदकर ,सुभाष चन्द्र बोस हों या पंडित नहरू

या अन्य महापुरूष। तस्वीर व हार फूल माला के बिना श्रद्धांजलि या मान सम्मान की कल्पना नहीं की जा सकती।

भूमि पूजन की परम्परा तो है ही। देश पूजन के लिए हमने मादरे वतन व मातृभूमि जैसे शब्दों को पीछे छोड़ते हुए ,भारत माता, शब्द की उत्पत्ति की ताकि देश के पूजने की राह हमवार हो सके । आज भारत माता की काल्पनिक तस्वीर बना कर चाहे वह दुर्गा के रूप में हो या अन्य किसी शक्ल में उसे पूजने का सिलसिला आरम्भ है।

जबकि संसार के किसी भी देश के नागरिक अपने देश के आगे माता शब्द नहीं लगाते। वह न देश को पूजते हैं,और न माता शब्द लगा कर देश की जय–जय कार करते हैं। केवल हमारा ही एक ऐसा विचित्र देश है। जहाँ के बहुसंख्यक नागरिक भारत माता की जय का नारा लगाते हैं। कोई सऊदी माता–अमरीकी माता–रूसी माता आदि की जय–जय कार नहीं करता । जबकि माता का आस्तित्व पति व पिता के बिना असम्भव है।

यदि भारत हमारी माता है, तो मेरी माता का पति कौन है ? जिसे हम देश पिता का नाम दे सकें। जिन भारत वासियों ने दूसरे देश की नागरिकता प्राप्त कर ली है और वह वहाँ रह भी रहे हैं। वह उस देश को अपना देश पिता घोषित कर सकते हैं। इस प्रकार दूसरे देशों की नागरिकता प्राप्त करने वालों के द्वारा हमारी भारत माता के कितने पति हो जायेंगे। पर हम भारत वासी जिनका दूसरे देश से कोई सम्बन्ध नहीं । हम किसे अपना देश पिता घोषित करें ? राष्ट्रपति और राष्ट्रपिता तो हमारे लोग समझते है, पर देश पिता का ज्ञान हमारे लोगों को नहीं है। यदि कुछ लोग अपनी सूझ बूझ का परिचय देते हुए । किसी देश को अपना देश पिता घोषित भी कर दें तो समस्त देश वासियों का उस पर सहमत होना एक बडी समस्या होगी। फिर एक प्रश्न यह भी उठता है कि ऐसी माता को कौन पसन्द करेगा जिसके अनेकों पति हों ? मेरा यह हास्यास्पद–व्यंगात्मक एवं गम्भीरात्मक प्रश्न(जिस दृष्टिकोण से भी इसे देखें) केवल उन्हीं लोगों से है. जो देश को भारत वर्ष के बजाय भारत माता के रूप में प्रदर्शित कर रहे हैं और जिनके नजदीक वंदे मातरम का गाया जाना देश भक्ति की कसौटी है।



## नारों का सम्बन्ध प्रत्येक के अकीदे से है

क्या यह हकीकत नहीं है कि आजादी के लिए अपनी जान कुरबान करने से पहले प्रत्येक क्रान्ति कारी अपने धार्मिक विश्वास और अकीदे को सामने रख कर, कोई नमाज पढ़ने की इच्छा व्यक्त करता ,कोई कलमा पढता, कोई वाहे गुरू कहता ,कोई जय भवानी कहता ,कोई वन्दे मातरम कहता था।

यह विषय अकीदे व विश्वास से सम्बन्धित है। जिसका सम्बन्ध हृदय व अन्तरात्मा से है। अब कोई कहे कि –जय माँ भवानी या वाहे गुरू या वंदे मातरम आजादी व देश भक्ति का नारा था। तो यह किसी प्रकार उचित नही है। यह बेमकसद की बातें छेड कर देश की जनता को भ्रमित करने से राजनैतिक लाभ तो उठाया जा सकता है परन्तु इससे न देश का कोई लाभ होगा और न समाज का।

## राष्ट्रीय गान से सम्बन्धित मुकदमा

इसी संदर्भ में मुझे अफसोस के साथ उस मुकदमे का वर्णन करना पड रहा है जो केरल प्रॉत से सम्बन्धित है। जिसमें एक ईसाई छात्र 15 अगस्त के अवसर पर राष्ट्रीय गान– "जन–गण–मन" ,पढने के बजाये ,खामोश खडा रहता था। स्कूल की प्रबन्ध कमेटी ने जब उसे पढने पर मजबूर किया तो उसने कहा कि –"(जन–गण–मन) में देश की जय–जय कार है और हम केवल ईश्वर की जय–जय कार करते हैं। हम ईश्वर को ही भाग्य विधाता मानते हैं और इस गान में देश को भाग्य विधाता कहा गया है। इस लिए हम नहीं पढ सकते"।

इस जुर्म में विद्यालय की प्रबन्ध कमेटी ने उसे स्कूल से निष्कासित कर दिया । ईसाई छात्र के माता पिता ने स्कूल प्रबन्ध कमेटी के इस फैसले के खिलाफ कोर्ट केस कर दिया । मामला सेशन कोर्ट होता हुआ ,सुप्रीम कोर्ट देहली पहुँचा । सुप्रीम कोर्ट ने 1987 ई0 में इतिहासिक फैसला दिया कि –"यदि 'जन–गण–मन' किसी की धार्मिक भावना व विश्वास से टकराता है तो उसका पढना उसके लिए अनिवार्य नहीं है"। यह नजीर आल इंडिया रूलिंग (ए0 आई0 इ0 वी0 एस0 स्टेट जन गणा के नाम से प्रसिद्व है।

जब राष्ट्रीय गान 'जन– गण–मन' को जो सरकारी तौर पर मंजूर

शुदा है। सुप्रीम कोर्ट ने धार्मिक भावना एवं विश्वास का ख्याल रखते हुए, यह छूट दी है। तो वंदे मातरम गाने पर इतना इसरार क्यों ?

## हठी प्रवृत्ति का परिणाम

यदि कोई वर्ग यह सोचता है कि यह गीत उसके अकीदे के विरूद्व है तो उसके गाने पर हठ करने के बजाए। उसका अकीदा जानने उसकी मनो भावना को समझने की कोशिश करनी चाहिए । यह कौन सी बात हुई ? कि आप कहते हैं कि अकीदे की बहस छोड़िए। इसे मत छेड़िए। यह हठी प्रवृत्ति है, बुद्विमत्ता नहीं है।

इसी प्रवृत्ति से नफरत का बीजारोपण होता है। इसी हठी प्रवृत्ति व दूषित मानसिकता के कारण डा0 अम्बेदकर को धर्म परिवर्तन करने पर मजबूर होना पडा था। क्योंकि वे स्वाभिमानी व्यक्ति थे। वह छूत–छात. ऊँच–नीच जैसे अपमान जनक व्यवहार की धार्मिक मान्यता को मानने को तैयार नहीं थे। मेरे निकट वंदे मातरम गीत का मामला ऐसा ही है। जो गीत हम मुसलमानों के अपमान का सूचक हो और एक घृणित उपन्यास का हिस्सा हो, जिससे हमारी भावना व अकीदे पर चोट पड़ती हो। ऐसे गीत का पढ़ना और गाना तो बहुत दूर की बात है। हम उसका एक शब्द भी कहना अपना अपमान समझते हैं।

इस गीत के लिखे जाने से पहले भी यहाँ मुसलमान मौजूद थे और लिखे जाने के बाद भी मौजूद हैं। ये मुसलमान कोई अरब और इगलैंण्ड से नहीं आये। ये इसी देश के मूल निवासी हैं जो धर्म परिवर्तित कर के इस्लाम में दाखिल होते गये। क्या कोई कह सकता है कि– गीत लिखे जाने से पहले यह लोग या इनके पूर्वज,पूर्व धर्म में या इस्लाम स्वीकार करने के बाद देश के वफादार नहीं थे ?

## तथा कथित देशभक्तों से कुछ बातें

जो लोग अपनी राष्ट्र भक्ति का ढिढोंरा पीट रहे है। जो भारत को माँ का नाम देकर, भारत माता कहते हैं। जो देश की धूल माथे पर लगाते हैं। क्या यह सच नहीं है कि– वही देश के मूल निवासियों से घृणा भी करते हैं ? वही शोषण अत्याचार व अन्याय करने को प्राचीन काल से अपना पुस्तैनी अधिकार बताते रहे हैं।उन्हीं की दूषित



मानसिकता के कारण देश में नक्सलवाद पनपा और आज उसने उग्र रूप धारण कर लिया है। आज देश की 40 प्रतिशत से अधिक जन संख्या गरीबी रेखा के नीचे जीवन जीने पर मजबूर है। इन में से यदि कुछ लोग अपने अधिकार की लड़ाई लड़ते हैं तो सरकार उन्हें नक्सलवादी करार देती है। देश को आजाद हुए 60 वर्ष से ऊपर हो गया। मैं पूछना चाहता हूँ कि इनका शोषण किसने किया ? इसी शोषण का नतीजा है कि आज आदिवासी पानी जंगल और ज़मीन विदेशी कम्पनियों को देने को तैयार नहीं है। सरकारें जब उन्हें उजाड़ना चाहती है तो वह अक्रोश व क्रोध में हथियार उठाने पर मजबूर होते हैं। देश भक्ति का ढिंढोरा पीटने वाले यह नहीं सोचते कि यह नंगे जिस्म भूखे पेट के लोगों में यह नक्सलवाद क्यों पैदा हो रहा है ?

शोषण की इन ही नीतियों के कारण आज देश में अशान्ति का माहोल है। जो लोग इस माहोल को जन्म देने वाले **हैं। वही** देश की एकता व अखण्डता की बात भी करते हैं और **दूसरी तरफ अपनी** दूषित व संकीर्ण मानसिकता द्वारा देश में अशान्ति **फैलाते हैं। यह** सरकार में भी होते हैं और सरकार के बाहर भी।

वह कौन हैं? जिन्होने मण्डल समर्थन के बजाए मण्डल का विरोध किया। और इसी परिप्रेक्ष्य में बाबरी मस्जिद के स्थान पर राम जन्म भूमि का षडयंत्र खडा किया। देश में अशान्ति के वातावरण को जन्म दिया। ये वही देश भक्त ही तो हैं जो अपनी आस्था का प्रश्न खड़ा कर के देश के कानून व व्यवस्था तक को मानने को तैयार नहीं। ये तथ्यों व तर्को को भी नकार रहे हैं। जिन्हें सरकार में बैठे लोगों का समर्थन व सहयोग प्राप्त था और आज भी प्राप्त है ।

जबकि तमाम विद्वानों व इतिहास कारों का मत है कि अयोध्या में न कोई राम जन्मे थे और ना ही वहाँ कोई मन्दिर था। देश में पिछले 20 वर्षों से जो कुछ हुआ और हो रहा है। साबरमती एक्सप्रेस से लेकर गुजरात के सामूहिक नरसंहार और देश में हुए बम काण्ड यह सब किसके करतूत हैं?

आज देश में जातीयता, क्षेत्रीयता, भाषाई व धर्म रूपी जितने झगड़े चल रहे हैं। क्या वह देश भक्तों की दूषित मानसिकता व दोष पूर्ण

नीतियों का परिणाम नहीं हैं ? यदि देश भक्तों ने देश के सभी वर्गों सभी भाषाओं सभी जातियों और प्रान्तों को समान रूप से देखा होता और सब के साथ न्याय किया होता तो आज देश में अशान्ति की स्थिति न होती। देश में भ्रष्टाचार की गंगा नीचे से ऊपर तक बह रही है। न्यायालय तक सुरक्षित नहीं हैं। सुप्रसिध्द लेखक व पत्रकार कुलदीप नैयर ने 16 दिसम्बर 2009ई0 राष्ट्रीय सहारा में प्रकाशित अपने लेख "न्यायालय की धूमिल होती छवि" में लिखते हैं कि –चीफ जस्टिस पी0 एन0 भगवती ने 20 वर्ष पहले अपने रिटायरमेंट के अवसर पर कहा था कि– "न्याय व्यवस्था में अंधा धुंध भ्रष्टाचार बढ रहा है। अभी ज्यादा समय नहीं गुजरा है जब रिटायर्ड चीफ जस्टिस एस0 पी0 भरूचा ने यह आरोप लगाया था कि न्यायालय में 25 प्रतिशत लोग भ्रष्टाचारी हैं"। मैं पूछना चाहता हूँ ये भ्रष्टाचारी कौन हैं ? क्या ये वही देश भक्त नहीं हैं जिनके आदेश से मस्जिद का ताला दर्शन व पूजा के लिए खोला गया जिनके आदेश पर शिलान्यास हुआ। इन ही देश भक्तों की न्याय पीठ में भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के कारण 55 वर्षों से मस्जिद का मुकदमा लटका हुआ है। जिस झूठे मक्कार मुख्य मंत्री के कारण बाबरी मस्जिद ध्वस्त हुई जिसकी सहमति व समर्थन से हजारों बेगुनाहों का खून बहा,कत्ल हुआ। उस मुख्य मंत्री को देश भक्त न्याय धीशों ने एक दिन की सजा देकर न्याय के लक्ष्य को जिस प्रकार पूरा किया है। वह न्याय नही न्याय के नाम पर मजाक है जो भ्रष्ट जैहनियत को उजागर करती है। ऐसे भ्रष्टों से क्या आप न्याय की आशा कर सकते हैं ? यह सोचने का विषय है।

आज भारत में जितने बडे–बडे तस्कर हैं। जितने बडे–बडे व्यापारी हैं। जितने सुरा सुन्दरी के नाम पर देश के गुप्त रहस्य बेचने वाले हैं। जितने राष्ट्रीय सुरक्षा की खरीद में दलाली करने वाले हैं। मैं पूछना चाहता हूँ कि वह सब के सब कौन हैं ? क्या इनमें से कोई मुसलमान भी है?———अंग्रेज भारत छोड कर चले गये। देश आजाद हो गया। परन्तु यह आजादी किसे मिली ? अपने को मुसलमान कहने वाले यदि देश भक्तों द्वारा अपमानित व प्रताडित किये जाते हैं या उन पर जुल्म व अत्याचार होता है। तो बात समझ में आती है। कि वह गैर हैं (हिन्दू नहीं) हैं। परन्तु जो लोग अपने आपको हिन्दू कहते हैं या हिन्दू होने पर गर्व करते हैं या हिन्दू धर्म के रक्षक कहे जाते रहे हैं। ऐसे लोगों का



अपमानित व प्रताडित किया जाना वह भी देश भक्तों द्वारा । क्या यह भी देश भक्ति है?

सिक्ख जो हिन्दू धर्म के रक्षक थे, 1984 ई0 में उनका जो सामूहिक नरसंहार सम्पूर्ण देश में सरकार की छत्रछाया में जिस प्रकार जगह जगह किया गया। क्या वह देश भक्तों के करतूत नहीं थे? देश भक्तों ने गौ हत्या पर अन्दोलन चलाये ऊँची जाति के लोगों के मारे जाने पर बंद मनाये। परन्तु क्या कभी दलितों के मारे जाने व उनके सामूहिक नरसंहार पर भी बंद मनाये या अन्दोलन चलाये?

देश भक्तों की इसी दूषित मानसिकता को देख और समझ कर ही भारत के भूत पूर्व प्रधान मत्री इन्द्र कुमार गुजराल यह कहने पर विवश हुए होंगें। जिसे सुप्रसिद्व साहित्यकार व फिल्म लेखक डा0 राही मासूम रजा ने उनके कथन को अपने एक लेख में (25 जनवरी 1987 ई0 साप्ताहिक धर्म युग) में लिखा था कि –

"बिहार में जिन्दा जलाये जाने वाले दलितों के बारे में लगभग चुप रहने वाले बुद्विजीवी पंजाब में मारे जाने वाले ऊँची जाति के हिन्दुओं पर इतने आँसू क्यो बहा रहे हैं? और जो उन्होंने रोना सीख ही लिया है। तो वह दिल्ली में मारे जाने वाले सिक्खों पर भी तो रोयें"। इन्द्र कुमार गुजराल के इसी कथन को लेकर 29 अगस्त 1988 ई0 साप्ताहिक बहुजन संगठक देहली ने एक लेख प्रकाशित किया था । जिसका शीर्षक था **(रोना है तो सब पर रोईये)**

इन ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर आप देश भक्तों की मानसिकता को भली प्रकार समझ सकते हैं। देश भक्तों ने आरक्षण के विरोध में अंदोलन चलाया पर आरक्षण के समर्थन मे क्यो नही? मण्डल का विरोध क्यो मण्डल का समर्थन क्यों नहीं? देश भक्तो द्वारा धर्म परिवर्तन पर जितना शोर मचाया जाता है। क्या कभी छूत–छात ऊँच–नीच ,जाति–पात पर भी मचाया गया या अंदोलन चलाया गया ? मैं जानना चाहता हूँ कि क्या देश भक्तों ने कभी देश में फैले भ्रष्टाचार घूसखोरी जमाखोरी काले धन की चोर बाजारी आदि के विरूध्द भी कोई अंदोलन चलाया? यदि नहीं चलाया तो क्यों?———

इसलिए कि इनमें उच्च स्तर से लेकर निम्न स्तर तक वही देश भक्ति के ढिढोंरची ही लिप्त हैं। यह वह मूल प्रश्न हैं जिनका उत्तर

तथा कथित देश भक्तो को देना चाहिए।

## हिन्दू राष्ट्र या राम राज्य का सपना

हम पूर्व में लिख चुके हैं कि भारतीय मुसलमान अरब व इगलैंड से नहीं आये। जिनकी राष्ट्रीयता पर शक किया जाय। यह वही लोग हैं। जिनके पूर्वज इसी देश में कभी और किसी समय शूद्रों (अछूतों–सछूतों) जैसा जीवन व्यतीत कर रहे थे।परन्तु जब तक वह शोषण व्यवस्था का हिस्सा बने रहे, राष्ट्र प्रेमी व देश भक्त थे।

जब उन्होंने शोषण व्यवस्था के जाल से अपने को निकाल लिया तो उनकी राष्ट्रीयता पर प्रश्न चिन्ह लगाये जाने लगे। भारत में यदि रहना है तो वंदे मातरम कहना है। यह प्रश्न चिन्ह लगाये जाने का सिलसिला आज कोई नया नही है। बहुत पुराना है।

इस प्रकार के प्रश्न वही लोग खड़ा करते रहे हैं। जो अपनी दूषित मानसिकता के लिए चर्चित हैं। इसी मानसिकता ने उनके अन्दर से अपने पराये दोस्त दुश्मन की तमीज खत्म कर दी। इसी कारण से यह अपने सह धर्मियों को जो इनकी अपनी जाति के नहीं होते उन पर भी घोर अन्याय व अत्याचार करने से यह नहीं चूकते। तो दूसरे धर्म वालों की इनके नज़दीक क्या हैसियत हो सकती है? इन ही अन्यायों व अत्याचारों से मजबूर हो कर ही, डा0 अम्बेदकर ने 1935 ई0 में कहा था कि–––––''मैं हिन्दू धर्म में पैदा हो गया यह तो मेरे अपने बस की बात नही थी। पर मैं हिन्दू रह कर मरूँगा नहीं यह मेरे अपने बस की बात है''। इन बातों के आधार पर आप फैसला कर सकते हैं कि देश की एकता को खतरा किस से है? मुसलमानों से या इन तथा कथित देश भक्तों से।

यही वह लोग हैं । जो देश में ''हिन्दी–हिन्दू–हिन्दुस्तान'' व ''राम राज्य'' का नारा लगा रहे हैं। श्री शंकरा नन्द शास्त्री ने अपनी सुप्रसिद्व पुस्तक ''पूना पैक्ट बनाम गाँधी'' में इन नारों की व्याख्या की है। वह लिखते हैं कि–''हिन्दी से तात्पर्य वामण धर्म की रक्षा और हिन्दुस्तान से तात्पर्य इनके देव मन्दिरों की रक्षा''। उन्होंने अपनी इसी पुस्तक में राम राज्य की भी व्याख्या की है। वह लिखते हैं कि –''राम राज्य से तात्पर्य ब्राहमण का अधिकार हो क्षत्रीय की प्रभुता हो और वैश्य का बोल बाला हो। इनके विरूद्व बोलने वालों की दिन दहाडे हत्या हो। धर्म के नाम पर



सछूतों और अछूतों का शोषण होता रहे''।

ध्यान रहे हिन्दू समाज में उच्च जातियों के जुल्म व सितम की कहानी बहुत पुरानी है। इन जालिमाना कुकृत्यों को वैध ठहराने के लिए शताब्दियों पहले ''मनुस्मृति'' का विधान रचा गया था। डा0 अम्बेदकर द्वारा मनुस्मृति के जलाये जाने के कार्य से हम सहमत नहीं हैं परन्तु उन्होंने अपना विरोध मनुस्मृति को जला कर व्यक्त किया था। भदन्त आनन्द कौशल्यान ने अपनी सुप्रसिध्द पुस्तक ''मनुस्मृति जलाई गयी क्यों? में इसका विस्तार से वर्णन किया है। इन ही जुल्म व सितम से परेशान हो कर शोषित वर्ग के लोग इस्लाम की ओर आकर्षित हुए। जिसकी पुष्टि समाजवादी नेता और वर्तमान कॉंग्रेसी सासद बेनी प्रसाद वर्मा ने लेब्राहन रिपोर्ट पर बहस में हिस्सा लेते हुए यूँ कहा –''मैं अयोध्या के निकट रहता हूँ मैं जानता हूँ कि वहाँ मुसलमान कैसे आये? कटटर धर्मी हिन्दुओं के अत्याचार ने दलितों को विवश किया कि वह इस्लाम कुबूल करें। यह बाबरी मस्जिद उन्हीं के लिए बनाई गयी थी। बी0 जे0 पी0 यह कैसे दावा कर सकती है कि राम वहाँ पैदा हुए थे''।

अभी दो सप्ताह पूर्व सुप्रीम कोर्ट के दो जजों दिलवेर भंडारी व जस्टिस ए0 के0 पटनायक ने 1979 ई0 में उ0 प्र0 के हुसैन गंज थाने के लोहारी गाँव में उच्च जातियों के लोगों द्वारा दलितों के सामूहिक कत्ल की घटना पर जो फैसला सुनाया है उसमें सरकार के लिए जहाँ एक पैगाम है वहीं अत्याचार की सत्यता का प्रमाण भी है।

जजों ने कहा कि–''कानून जम्हूरी शासन चलाने के लिए जरूरी है कि सदियों पुरानी जातिवादी व्यवस्था को जितनी जल्द मुमकिन हो सके खत्म कर दिया जाय,ताकि ऊँची जातें नीची जातों पर जुल्म न कर सकें''।

## षडयंत्रों का राज खुला

जिस हिन्दू राष्ट्र व राम राज्य की बातें संघ परिवारी आनंद मठ के गीत ''वंदे मातरम'' गा कर, कर रहे हैं और हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए प्रयास रत हैं वह अब कभी साकार होने वाला नहीं है। क्योंकि लोगों पर षडयंत्र खुल चुका है। दैनिक हिन्दी राष्ट्र सहारा लखनऊ के सम्पादक ने इन षडयंत्रों का चित्रण 10 वर्ष पूर्व अपने 10 अप्रेल 1999 ई0 के सम्पादकीय लेख में जिस प्रकार किया है वह आँखें खोलने के लिए

काफी है। वह लिखते हैं कि—

"धर्म के नाम पर भारत में जितने उत्पीडन हुए हैं उनकी मिसाल अन्य जगह दुर्लभ है। शम्बूक का वध धर्म के नाम पर ही किया गया था। एकलव्य का अंगूठा कटवाने वाले भी धर्माधिकारी ही थे। धर्म की आड़ में ही वर्णाश्रम व्यवस्था की स्थापना हुई। जो कालान्तर में शूद्रों के उत्पीड़न का सबसे मजबूत औजार बनी। आखिर यह धर्म ही की तो आज्ञा है कि शूद्रों को मिटटी के टूटे पात्रों में ही खाना दिया जाना चाहिए।

शूद्रों और महिलाओं को धर्म के नाम पर ही तो अधिकार विहीन बना कर रखा गया। धर्म ही तो यह कहता है कि यदि कोई शूद्र वेद वाणी सुन ले तो उसके कान में पिघला शीशा डाल देना चाहिए। शूद्रों और नारियों को शस्त्र व शास्त्र से धर्म ने ही वंचित किया। इतना ही नहीं धर्म की आज्ञा से एक पूरे के पूरे तबके को अछूत बना दिया गया। हिन्दू धर्म, विश्व का अकेला धर्म है जो जात–पात छुआ–छूत और ऊँच–नीच की संस्कृति को धार्मिक वैधता प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में उसे उचित ठहराता है।

भारत के दलित आज भी मुक्ति की प्रत्याशा में खड़े हैं और हिन्दू धर्म ने उनकी मुक्ति के मार्ग में स्मृतियों संहिताओं और पुराणों के रूप में ऐसे जबरदस्त पहरेदारों को बिठा रखा है कि वह मुक्ति के लिए छटपटा तो सकते हैं, लेकिन मुक्त नहीं हो सकते। आज भी हिन्दू समाज की सारी मान्यतायें दलित विरोधी हैं"।

(दैनिक राष्ट्रीय सहारा लखनऊ,10 अप्रेल 1999 ई0 के सम्पादकीय से उध्दृत–सत्य खोज,सत्यपरख–पृष्ठ–11)

लेखक ने अछूत समाज की व्यथा का जो चित्रण किया है। वह हिन्दुत्व वादियों की घृणित मानसिकता का सूचक है। दलित अब अपमान जनक जीवन जीने को राजी नहीं हैं। वह मुक्ति की प्रत्याशा में खड़े हो चुके हैं। वह शोषितों के हजारों वर्षो के बिछाये जालों को काट–काट कर बाहर निकलने के लिए प्रयासरत हैं। धर्म परिवर्तन पर प्रतिबन्ध लगा कर क्या इन प्रयासों पर बंध बाँधा जा सकता है?

———कदापि नहीं।



आत्म सम्मान की भावना रखने वाला कोई भी स्वाभिमानी व्यक्ति जिनके पूर्वजों को सदियों से सताया जाता रहा हो। जिन्हें अछूत बना कर रखा गया हो। भूखा नंगा रखा हो। शिक्षा से वंचित रखा गया हो। वह इन अपमान जनक प्रवृत्तियों से कितने दिन चिपका रह सकेगा ? यह प्रश्न शोषितों के लिए भी महत्तव पूर्ण है और शोषकों के लिए भी विचारणीय है। परन्तु खेद है कि शोषक जातियाँ इसे समझने में अक्षम हैं। वे मानवता व इंसानियत नहीं जानती कि यह किस चिडिया का नाम है? यदि जानती होतीं तो निर्दोष सिक्खों दलितों मुसलमानों के सामूहिक नरसंहार एवं ईसाइयों के कत्ल व गारतगरी करने की घटनायें कानून व्यवस्था के रक्षकों की छत्र छाया में न घटतीं। ये न्याय और इसाफ की परिभाषा एवं व्यवहार से भी अपरिचित हैं। इन्हीं कारणों से जिसकी लाठी उसकी भैंस का कानून देश में चल रहा है। कानून व्यवस्था से बडे–बड़े राजनीतिक गुंडे आजाद हैं। कचेहरी न्यायालय पुलिस प्रशासन व कानून तो हम गरीबों के लिए हैं।

जी हाँ ये विवेक बुध्दि (फहम) अन्तर्दृष्टि (बसीरत) से भी वंचित हो चुके हैं। उन्हें संतोष एवं सुख की अनुभूति (जुल्म बर्बरता अपमान जनक व्यवहार शोषण कत्ल व गारतगरी फसाद आदि)जैसे कुकृत्यों से होती है। तो ये क्या जानें न्याय क्या है? इंसानियत क्या है?

## बाबरी मस्जिद के विध्वंस के लिए 6 दिसम्बर ही क्यों?

बाबरी मस्जिद के विध्वंस के लिए वंदे मातरम का नारा लगाने वाले तथा कथित देश भक्तों ने 6 दिसम्बर ही क्यों चुना ? यह प्रश्न विचारणीय है। ध्यान रहे 6 दिसम्बर बाबा साहब डा0 अम्बेदकर का निर्वाण दिवस है। निर्वाण दिवस को भुलाने के लिए इस दिन को इस लिए चुना गया कि डा0 अम्बेदकर सदैव हिन्दुत्व वाद के विरूध्द संघर्ष करते रहे थे। उनका संघर्ष और उनकी जीवन गाथा बहुजन समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है। जो उन्हें शोषण के विरूध्द संघर्ष करने को प्रेरित करता है। उनका साहित्य व उनका जीवन दर्शन हिन्दुत्व व हिन्दू राष्ट्र के बनने में रोड़ा है। इस लिए यदि देश का बहुजन समाज इन्हें जितनी जल्दी भूल जाय। उतना ही हिन्दुत्व के लिए अच्छा हो गा।

6 दिसम्बर को बाबा साहब डा0 अम्बेदकर का निधन हुआ था।

उनके इस दिन को देश का करोड़ों बहुजन समाज निर्वाण दिवस के रूप में मनाता है। प्रत्येक वर्ष इस अवसर पर मुम्बई की माहम चौपाटी पर बनी उनकी समाधि पर दिन भर लाखों लोगों का मेला लगा रहता है।

तथाकथित देश भक्तों ने कभी भी बाबा साहब डा0 अम्बेदकर के अंदोलन और उनके द्वारा तैयार किये गये संविधान को मंजूर नही किया। जाति–पात, छुआ–छूत आदि के विरूध्द उन्होंने जो प्रयास किये। जिसे उन्होने संविधान में समाजी समानता व धर्म निर्पेक्षता के उसूल जो वास्तविक तौर पर संविधान की आधार शिला हैं। उसे संविधान में जगह दी। उन सबसे हमेशा संघ परिवार को परहेज रहा है। इस सोच के लोगों ने बाबा साहब का विरोध कदम कदम पर किया। चाहे मन्दिर में जाने की बात हो या सार्वजनिक चोबदार तालाब में पानी पीने की बात हो या हिन्दू कोड बिल के द्वारा महिलाओं को मिलने वाले अधिकार की।

इतिहास साक्षी है किं ईट पत्थरों और गालियों से इन ही तथा कथित देश भक्तों ने उनका विरोध किया था। बहुत कम लोगो को मालूम है कि जिन लोगों ने बाबा साहब को पार्लियामेंट में न पहुँचने देने की कसम खायी थी। वह जब अपने मकसद में सफल हो गये। तो बाबा साहब को पार्लियामेंट में भेजने के लिए एक मुस्लिम सांसद ने सांसद से इस्तीफा देकर उन्हें अपने क्षेत्र से लडाया और जिता कर सांसद में पहुँचाया था। जब उन्होंने जीवन के अन्तिम दिनों में हिन्दू धर्म त्याग कर बौध्द धर्म अपनाने की घोषणा की तो धर्म को राष्ट्रवाद की बुनियाद समझने वाले मारे क्रोध व अक्रोश के आपे से बाहर हो गये। परन्तु उस लोह पुरुष ने इन मकड़ जालों की कोई परवाह न की।

विषय से हठ कर मुझे दलित अंदोलन और बाबा साहब डा0 अम्बेदकर की चर्चा का प्रयास इसलिए करना पडा, कि हिन्दुत्व वादी शक्तियाँ मुसलमानों पर निशाना साध कर दलित समाज को, चाहे वह सछूत हों या अछूत गुमराह करने का प्रयास हमेंशा करती रही हैं। बहुजन समाज की गुमराही ही में हिन्दुत्व वादियों के हित सुरक्षित हैं। देश के समस्त मज़लूमों को उनके नारे रूपी षडयंत्रों से जो वह समय समय पर मुसलमानों के सम्बन्ध में छोडते रहते हैं । सावधान रहने की जरूरत है।



## समान सिविल कोड का नारा

ये तथाकथित देश भक्त समान सिविल कोड बनाये जाने की चर्चायें भी चलाते रहते हैं। बहुजन समाज को इसे गम्भीरता से समझने की जरूरत है। इसके पीछे वास्तविकता यह है कि इस विधान के द्वारा देश के अल्प संख्यक वर्ग को उसकी धार्मिक भावनाओं में न केवल उलझा दिया जाय, बल्कि इस विधान के द्वारा उन्हें उनकी धार्मिक मान्यताओं से काट कर अलग कर दिया जाय। जिस तरह भारत में जन्मे बौध्द धर्म को बड़ी महारत से खत्म किया गया। वही परीक्षण वह यहाँ मुसलमानों और इस्लाम के साथ भी करना चाहते हैं।

ताकि देश में जुल्म व शोषण पर आधारित हिन्दुत्व वादी व्यवस्था के लिए घातक इस्लामी व्यवस्था का कोई अंश शेष न रहे। क्योंकि इस्लामी विधान पर मुसलमानों के जिन्दा रहने से हिन्दुत्व वाद शक्तिशाली नहीं बन सकता। इस लिए हिन्दुत्व वाद को सशक्त बनाने के लिए मुसलमानों को उनकी मुख्य धारा से काटना जरूरी है।

इतिहास पढ़ने वालों को याद होगा कि तीन सौ वर्ष के मुस्लिम दौर हुकूमत में जो हिन्दुत्व वाद अपनी अधमरी अवस्था को पहुँच चुका था अकबर के दौर हुकूमत में किस प्रकार जिन्दा किया गया। दीन इलाही की बुनियाद क्यों डलवायी गयी ? और फिर पं0 तुलसी दास ने वेद पुराण गीता आदि धर्म ग्रंथ के होते हुए "राम चरित्र मानस" क्यों लिखी? यह प्रश्न विचारणीय है। आज राम चरित्र मानस हिन्दू जन मानस का मुख्य धार्मिक ग्रन्थ बन चुका है। समान सिविल कोड अकबर के दीन इलाही जैसा षडयंत्र है। इसके पीछे मुझे हिन्दू राष्ट्र बनाये जाने का रहस्य व षडयंत्र दिखाई पडता है।

जबकि बताया जाता है कि इस कानून द्वारा राष्ट्रीय एकता को बल मिलेगा। परन्तु मैं पूछना चाहता हूँ कि जो लोग हिन्दू समाज में आज तक एकता स्थापित न कर सके। वह समान सिविल कोड द्वारा एकता कैसे स्थापित करेंगे? विषय से हठ कर मैं ने जान बूझकर कुछ समस्याओं पर चर्चा इसलिए की है ताकि देश का बहुजन समाज उन मसलों से अवगत हो जाय जो हिन्दुत्व वादी उठाते रहते हैं। समान सिविल कोड का मसला भी "वंदे मातरम" जैसा ही है जो समय समय पर उठाया जाता रहता है।

## स्पेन जैसी कूटनीतिक चालें

मैं पूर्व मे लिख चुका हूँ कि भारत में जन्मे बौध्द धर्म को बड़ी महारत से खत्म किया गया। वही कूटनीतिक चालें मुसलमानों और इस्लाम के साथ यहाँ भी दोहराये जाने की चली जा रही है। मेरे संज्ञान में यह बात भी आयी है कि भारतीय मुसलमानों को उनके धर्म व संस्कृति से बेदखल करने के लिए तथा कथित देश भक्तों के एक गिरोह ने कई वर्ष पूर्व स्पेन का दौरा इस उद्देश्य से किया था कि वहाँ मुसलमानों को किस प्रकार उनके धर्म एवं संस्कृति से काट कर खत्म किया गया था। भारत में समान सिविल कोड के मुद्दे के पीछे वही षडयंत्र कारफर्मा नज़र आता है।

ध्यान रहे सन 712 से 1492 तक कुल 780 वर्ष तक मुसलमानों ने स्पेन में राज्य किया था। आज भी वहाँ जीवन के हर क्षेत्र में इस्लामी संस्कृति विद्यमान है। परन्तु मुसलमान नहीं है। जो सुख सुविधा के गुलाम तथा कथित मुसलमान थे वह अपना चोला बदल कर, उसी में विलीन हो गये। बहुत से मुसलमान मिश्र टर्की टयुनेशिया और मोरक्को हिजरत कर गये। गरीब व असहाय मुसलमान वहीं छूट गये। अधिकाँश धनहीन व धनवान मुसलमानों का स्पेनीकरण हो गया। मुसलमानों के अन्तिम समूह ने सन 1612 में स्पेन को अलविदा कहा था। उस समय दुनिया के शक्तिशाली मुस्लिम देश स्पेन के मुसलमानों की मदद इसलिए न कर सके कि जो कूटनीतिक चालें योजना बध्द तरीके से मुसलमानों के विरूध्द की जा रही थीं। उसकी गति बड़ी धीमी थी। धीमी गति के कारण मुसलमान उन षडयंत्रों और चालों को न समझ सके ।

भारत में गत 50 वर्षो से अक्षरशः वही तकनीक व रणनीत अपनायी जा रही है। जो स्पेन के मुसलमानों के लिए अपनायी गई थी। भारतीय मुसलमानों का जुर्म केवल इतना है कि वह शूद्र व गुलाम बनने को तैयार नहीं हैं। वहाँ भी दंगे कराये जा रहे थे। यहाँ भी दंगे कराये जा रहे हैं। दंगाइयों को पुलिस व सरकार का संरक्षण वहाँ भी प्राप्त था। यहाँ भी प्राप्त है। सरकारी सेवाओं विशेष कर पुलिस व फौज से दूर रखने की कूटनीतिक चालें वहाँ भी चली जा रही थीं। यहाँ भी चली जा



रही हैं। ध्यान रहे 1935 में मुसलमान सरकारी सेवाओं में 35 प्रतिशत थे। आज एक प्रतिशत भी नहीं हैं।

भाषाई संकीर्णता की कूटनीतिक चालें एवं मदरसों, मस्जिदों को बदनाम करने के प्रयास जिस प्रकार वहाँ किये जा रहे थे । यहाँ भी हो रहे हैं। मुसलमानों के पर्सनल ला पर हमला वहाँ भी था। यहाँ भी है। इन समस्त षडयंत्रों के पीछे मुझे देश को हिन्दू राष्ट्र बनाने की दूषित मानसिकता दिखाई पड़ती है।

## भारत विभाजन क्यों ?

भारत विभाजन और पाकिस्तान बनने के पीछे हिन्दू राष्ट्रवादियों की दूषित मानसिकता कारफर्मा थी। जो भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाना चाहते थे। परन्तु हिन्दू राष्ट्र का सपना देश विभाजन के बाद इस लिए साकार न हो सका क्योंकि कुछ मुसलमान विभूतियों ने पाकिस्तान जाने के बजाये भारत में रहने को प्राथमिकता दी। दूसरे लोह पुरूष बाबा साहब डा0 अम्बेदकर हिन्दू राष्ट्र के लिए सबसे बड़ी रूकावट थे। क्योंकि वह जिस समाज का प्रतिनिधित्व कर रहे थे । वह शोषित समाज था। जो हिन्दू राष्ट्रवादियों के लिए मुश्किलें(अछूतिस्तान की माँगकर के) खड़ा कर सकता था। इन हीं कारणों से देश हिन्दू राष्ट्र न बन सका।

यद्यपि हिन्दू राष्ट्र बनाने का चोर दिलों में मौजूद था। इस चोर के बाहर आने में इसलिए भी दिक्कतें थीं कि अज्ञानतावश कुछ शूद्र की सछूत जाति के सछूत नेता हिन्दुत्व की भावना में बह कर हिन्दू राष्ट्रवादियों के समर्थक बने हुए थे। इन राष्ट्रवादियों को यह डर भी था कि यदि हमारे हृदय का चोर इन सछूत नेताओं पर खुल गया कि हम कैसा हिन्दू राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तो मामला बिगड जायेगा। सरदार वल्लभ भाई पटेल की गणना उन ही में थी। वह अपने समाज के हित के बजाए अज्ञानतावश सदैव दूसरों के हाथों का खिलौना बने रहे। यदि वह उस समय की राजनीति में समस्त शोषित जातियों के लिए सक्रिय भूमिका निभाते और डा0 अम्बेदकर की पीड़ा को समझते तो देश की राजनीति का नकशा कुछ और होता। फिर बाबा साहब अम्बेदकर को आर0 पी0 आइ0 न बनानी पडती। यही नहीं कांशीराम को बामसेफ डी0

एस0 फोर0 और बहुजन समाज पार्टी या दिवंगत नेता सोनेलाल पटेल को "अपना दल" बनाने की बाद को जरूरत न पड़ती और न उ0 प्र0 के भूतपूर्व मुख्यमंत्री के विरूद्व यह नारे लग पाते कि–"राम नरेश वापस जाओ वापस जा कर भैंस चराओ"। न वी0 पी0 सिंह के मण्डल कमीशन लागू करने पर जो देश में राजनीतिक भूकम्प मचा वह न मच पाता। बल्लभ भाई कटटर मुस्लिम दुश्मन थे। वह देश के होम मिनिस्टर थे। भारत विभाजन के समय मुसलमानों का जो कत्ल आम हुआ या गाँधी जी की जो हत्या हुई। उसमें उनकी अप्रत्यक्ष रूप से अहम भूमिका रही थी।

## हिन्दू राष्ट्र वादियों से आखिरी बात

मैं अन्त में अपने हिन्दू राष्ट्रवादी भाईयों से इतना कहना चाहता हूँ कि मैं आप सब का शत्रुता की हद तक विरोधी नहीं हूँ। जैसा कि आप मेरे लेखों से रखते हैं। न मैं आप से इतनी द्विवेष व घृणा रखता हूँ कि मानवता व इंसानियत को भूल कर बिला सबब अपमानित व प्रताड़ित करूँ। न बिला सबब आप पर किसी भी प्रकार के जुल्म व ज्यादती व अन्याय को सहमति और सहयोग प्रदान कर सकता हूँ। लेकिन यह भी सच है कि मैं आपका कटटर विरोधी अवश्य हूँ। मेरा यह विरोध आपसे वैचारिक आधार पर है। क्योंकि आप शोषण अत्याचार व अन्याय पर आधारित दूषित मानसिकता के न केवल पक्षधर हैं अपितु इस जुल्म ज्यादती ने आपके हृदय को पाषाण बना दिया है। भारत में होने वाले निर्दोषों के सामूहिक नरसंहार की घटनायें और कुछ वर्ष पूर्व होने वाला गुजरात नरसंहार इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

मैं ने अपने इस लेख में आपके पाषण हृदय को सामने रखकर सख्त और कठोर शब्दों का प्रयोग जान बूझ कर किया है। यह हमारी मजबूरी है। क्योंकि लोहा लोहे से ही नरम पड़ता है और पत्थर पत्थर से ही टूटता है। मेरे कठोर शब्द शायद आपके पाषाण हृदय पर लोहे और पत्थर का काम कर जायें। और आप सभी का हृदय शायद दया करूणा से नरम पड़ जाये उनके लिए जो निर्दोष हों। जालिम का समर्थक मैं भी नहीं। लेकिन मजलूम का समर्थक व हितैषी जरूर हूँ। वह चाहे किसी जाति, धर्म व क्षेत्र का क्यों न हो । इस लिए हमारा विरोध जारी है और जारी रहेगा।



हमने सत्य और हक पर जीने और मरने की प्रतिज्ञा कर रखी है जो हमें सामाजिक दायित्व के लिए संघर्ष पर आमादा करती रहती है। मेरी यह पुस्तक उसी संघर्ष का परिणाम है। मैं ने अपने इस लेख में जो प्रश्न खडे किये हैं। उसके पीछे मेरा उद्देश्य मात्र इतना है कि मैं आपकी अंतरात्मा को झिझोडूँ और ईश्वर से प्रार्थना करूँ कि वह आप सभी को सदबुध्दि दे। सत्य मार्ग पर चलाये। हृदय को कपट द्विवेष घृणा से पाक कर दे। मानवता वादी बना दे। मानव सेवा की प्रेरणा और क्षमता प्रदान करे। सदभाव प्रेम सहयोग और सहायता से हृदय को भर दे ताकि देश में सुख और शान्ति का संचार हो। यही अभिलाषा अपने लिए भी है और आप राष्ट्र भक्तों के लिए भी।।

## डा0 मो0 इकबाल का तराना

यदि ईमानदारी व वास्तविकता की दृष्टि से देखा जाए ,तो डा0 मो0 इकबाल के कौमी तराने "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा" में देश के प्रति जो प्रेम प्रतिष्ठा व आदर सम्मान व्यक्त किया गया है वह किसी और तराने में नजर नहीं आता। राष्ट्रीय गीत ऐसा हो जो लोगों में देश प्रेम की भावना जागृत करे। जो देश जाति और वंश को नकारने वाला हो। जो देश वासियों को प्रेरणा देकर एकजुट करे। दूसरे गीत ऐसा हो जो हर देश वासी चाहे वह देहाती हो या शहरी पढ़ा हो या बेपढा सब की समझ में आ रहा हो।

डा0 मो0 इकबाल के तराने में कौमी गीत बनाये जाने के समस्त गुण विद्यमान थे। लेकिन उस समय के हमारे देश के कर्णधारों व देश बन्धुओं ने इसे कौमी तराना अर्थात राष्ट्रीय गान न बनाकर 27 दिसम्बर 1911 ई0 को जार्ज पंचम की ताजपोशी व उनके भारत आगमन के अवसर पर उनकी शान प्रशंसा व महिमा में पढे गये गीत "जन–गण –मन" को राष्ट्रीय गान बनाने को प्राथमिकता दी। देश के कर्णधारों ने उस समय देश हित में ही अंग्रेज भक्ति के इस गीत को कुछ सोच समझ कर ही राष्ट्र गान बनाने का निर्णय लिया होगा। कहा जाता है कि जार्ज पंचम ने ही बंगाल विभाजन के फैसले को रद किया था।

## टैगोर का सम्पूर्ण (राष्ट्रगान-गीत)

रवीन्द्र नाथ टैगोर का यह गीत पाँच (स्टेंजा) पर आधारित है। जिसके प्रथम (स्टेंजा) को राष्ट्र गान घोषित किया गया है। हम समस्त गीत को पाठकों के ज्ञान वर्धन हेतु "राष्ट्रद्रोही राष्ट्रगान" पुस्तक के लेखक विलास खरात के आभार के साथ यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

(1)

जन–गण–मन अधिनायक जय हे भारत–भाग्य–विधाता!<br>
पंजाब सिंधु गुजरात मराठा द्राविड़ उत्कल बंग!<br>
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधि तरंग!<br>
तव शुभ नामेजागे, तव शुभ आशिष मांगे<br>
गाहे तव जय गाथा! जन–गण–मंगल–दायक<br>
जय हे भारत भाग्य–विधाता! जय हे ,जय हे, जय हे,<br>
जय जय जय जय हे!

(2)

अहरह तवआव्हान प्रचारित, सुनि तव उदार बाणी!<br>
हिन्दू बौध्द सिख जैन, पारसिक मुसलमान खिस्तानी!<br>
पूरब–पश्चिम आशे तव सिंहासन पाशे!<br>
प्रेमहार यश गाथा जन–गण–ऐक्य–विधायक<br>
जय हे भारत–भाग्य–विधाता! जय हे जय हे जय हे<br>
जय जय जय जय हे!

(3)

पतन –अभ्युदय–बंधुर पन्था युग–युग –धावित यात्री<br>
हे चिर सारथी तव रथ चक्रे मुखारित पथ दिन रात्रि!<br>
दारूण विप्लव मांझे तव शंख ध्वनि बाजे!<br>
संकट –दुःख–त्राता! जन –गण–पथ–परिचायक<br>
जय हे भारत–भाग्य–विधाता! जय हे जय हे जय हे<br>
जय जय जय जय हे!

(4)

घोर तिमीर घन निबीड निशीये पीडित मूच्छित देशे!<br>
जागृत छिल तव अविचल मंगल, नतनयने अनिमेषे!<br>
दुःस्वप्ने आतंके रक्षा करिले अंके!



स्नेह मयी तुमि माता जन–गण–दु,ख–त्रायक<br>
जय हे भारत – भाग्य –विधाता! जय हे जय हे जय हे,<br>
जय जय जय जयहे!

(5)

रात्रि प्रभातिल उदित रविच्छबि पूर्व उदय–गिरी भाले!<br>
गाहे विहंगम,पुण्य समीरण, नव जीवन रस ढाले!<br>
तव करूणारूण रागे, निद्रित भारत जागे<br>
तव चरणे नत माथा! जय जय जय हे जय,<br>
राजेश्वर भारत भाग्य विधाता! जय हे जय हे जय हे<br>
जय जय जय जय हे!

## राष्ट्रगान का अर्थ

गीत के प्रथम स्टेंजा के अर्थ पर भी दृष्टिपात करें।

**प्रथम अर्थ** (पुस्तक –गीत माला–पृष्ठ–6 से उध्दृत है)

जन–समुदाय की आकांक्षाओं के प्रतिनिधि भारत के भाग्य को बनाने वाले तुम्हारी जयहो। पंजाब सिन्ध गुजरात महाराष्ट्र दक्षिणी प्रदेश उडीसा बंगाल विन्ध्य और हिमालय की पर्वत श्रेणियाँ गंगा यमुना तथा उठती हुई सागर की लहरें तुम्हारे शुभ नाम की प्रशंसा की गाथाओं में स्नान करती हैं। जन समुदाय का कल्याण करने वाले भारत के भाग्य को बनाने वाले तुम्हारी जय हो । तुम्हारी बार बार जय हो।

उपरोक्त पुस्तक (गीत माला) राजकीय केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान उ0 प्र0 इलाहाबाद ने 1985 ई0 में प्रकाशित की थी।

**दूसरा अर्थ** (पुस्तक–राष्ट्रद्रोही–राष्ट्रगान–पृष्ठ–12 से उध्दृत है)

(जन गण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता)–इस लाइन में राजा पंचम जार्ज को भारत की जनता का अधिनायक और उनका भाग्य निर्धारित करने वाला कहा गया है। (पंजाब सिंध गुजरात मराठा द्रविड़ उत्कल बंग) उस समय ये प्रॉंत ही अंग्रेज़ों के अधिकार में थे। इस लिए केवल इनका ही उल्लेख किया गया है। कश्मीर, राजस्थान, तमिलनाडू, ऑंध्र, मैसूर या कर्नाटक आदि राज्य अंग्रेजी अधिकार से बाहर थे। इस लिए गीत में उनका उल्लेख नही किया गया है। (विंध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधि तरंग) इसी कारण गीत में यमुना

और गंगा का उल्लेख है। लेकिन अरब सागर और हिन्द महा सागर का उल्लेख नहीं है क्यों कि वह पुर्तगालियों के कब्जे में थे। (तव शुभ नामे जागे ) हम भारतीय तुम्हारा ही (राजा पंचम जार्ज का) नाम लेकर जागते हैं। (तव शुभ आशिष मागे) और तुम से आशीर्वाद माँगते हैं। (गाहे तव जय गाथा) और तुम्हारी (भारत की) जीत के गुण गाते हैं।

(उपरोक्त अर्थ "राष्ट्रद्रोही राष्ट्रगान" पुस्तक से सम्बन्धित है)

टैगोर की कविता के बाकी स्टेंजास जो राष्ट्रगान में शामिल नहीं है। उनका अर्थ आगे इस प्रकार है---

"तुम्हारे सिंहासन के चारों ओर सभी धर्मो के लोग इकठठा हो कर प्रेत का वर्षाव करते हैं और तुम्हारे (राजा पंचम जार्ज के ) सहानुभूति पूर्ण शब्द सुनने का इन्तिजार करते हैं। हम अपने राजा की प्रशंसा करते हैं। जिसने सारथी बनकर हम मुसाफिरों को पुरातन दुखों से बाहर लाया। हम (भारत वासी) इस देश में गहरे अज्ञान दुखों गरीबी से ग्रस्त अचेत पड़े थे। हम अपने आँखों के इशारे का और आपकी माता (इंग्लैंड की महारानी) के सच्चे संरक्षण में आने की प्रतीक्षा में पड़े थे। तुम्हारी सहानुभूति पूर्ण योजनाओं से सोया हुआ भारत जाग जायेगा। ओ महारानी हम तुम्हारे कदमों में सिर झुकाते हैं और राजेश्वर (राजा जार्ज पंचम )के विजय की कामना करते हैं"।

(संदर्भ प्राप्ती–त्रिइब्लिसी शोषण–व्यूह विध्वंस भाग –1,(प्रथम आवृत्ती,अगस्त 2002, पृष्ठ–181 से उदधृत)(दलित वाईस,पी–20,1–15 सितम्बर 2001)(राष्ट्र द्रोही राष्ट्रगान–पृष्ठ–11–14)

## राष्ट्र गान पर मेरा दृष्टिकोण

राष्ट्रगान के सिलसिले में मेरे इस लेख से बहुत से लोग अचरज में पड गये होंगे। यद्यपि मेरे हृदय में किसी प्रकार का ऐसा कोई खोट नहीं है कि मैं राष्ट्रगान का अपमान करूँ। परन्तु जब सत्यता उजागर हो गयी तो यदि अपमान नहीं तो सम्मान भी नहीं रहा। मैं दुविधा में पड़ गया हूँ। मेरे इस सच कहने को तथा कथित देश भक्त मुझे देश द्रोही की संज्ञा भी दे सकते हैं पर क्या करूँ मजबूर हूँ।

मैं पूर्व में लिख चुका हूँ कि उस समय हमारे देश के कर्णधारों ने अंग्रेज भक्ति के इस गीत को कुछ सोच समझ कर ही देश हित में यदि



राष्ट्रगान बनाया था या घोषित किया था तो आज 60 वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद भी अंग्रेज भक्ति का यह गीत राष्ट्रगान के रूप में क्यो गाया जा रहा है ? यह प्रश्न मेरी अन्तरात्मा को बराबर कचोटता रहता है। जबकि इस गीत में किसी प्रकार का देश प्रेम उमड़ता नहीं दिखायी पड़ता। फिर भी हम गाये जा रहे हैं और करोड़ों छात्र –छात्राओं से गवा भी रहे हैं। जबकि यह गीत देश की आजादी के लिए बलिदान होने वाले क्रान्ति कारियों की खुली तौहीन है।

मैंने अपना दृष्टिकोण जनता के समक्ष इसलिए रखा है कि वही न्याय संगत व तर्क संगत फैसला कर सकती है। क्योंकि समस्त राजनीतिक मंच अपने स्वहित स्वार्थ व तथा कथित देश भक्तों की काली भेड़ों से जो उनके खुद के सगठनों में मौजूद हैं उनकी कठपुतली बन चुके हैं। उनसे किसी प्रकार की आशा करना अपने को मूर्खों की श्रेणी में गिनने के अतिरिक्त कुछ नहीं।

इन राजनीतिक नेताओं की राजनीतिक नीतियाँ जो (दण्ड अपराध भ्रष्टाचार आदि) से सम्बन्धित हैं। जिसे कानूनी हैसियत हासिल है। वह केवल हम गरीबों के लिए है। देश के बड़े–बड़े राजनीतिक नेता देश के कानून और न्याय पालिका की परिधि से बाहर हैं। देश की न्याय व्यवस्था व कानून धनवानों और राजनीतिज्ञों की दासी बन चुकी है। यदि ऐसा न होता तो गुजरात नरसंहार का मुखिया नरेन्द्र मोदी और बाबरी मस्जिद के विध्वंसक मुजरिम कानून के शिकंजे से बाहर न होते। ऐसे देश भक्तों द्वारा यदि गुलामी का गीत गवाया जा रहा है तो इसमें अचरज की क्या बात हो सकती है।

## एक दृष्टि वंदे मातरम पर भी

"वंदे मातरम" की पृष्टिभूमि पर प्रकाश डालते हुए "राष्ट्र द्रोही राष्ट्र गान" पुस्तक के लेखक –प्रा0 विलास खरात लिखते हैं कि----

"बंकिम का लिट्रेचर यह कहता है कि उन्होंने वंदे मातरम जो गीत लिखा। वह किसी गुलाम देश को सामने रख कर नहीं। किसी भारत माता को भी सामने रख कर नहीं। अपितु यह गीत सन 1875 ई0 की दुर्गा अष्टमी की मध्य रात स्फुरित हुआ। उन्हें उस रात एक साक्षात्कार हुआ। इस साक्षातकार में दस भुजा वाली माँ दर्गा ने दर्शन दिया। उसी

अचेत अवस्था में वंदे मातरम कागज पर उतरा"।

मूलतः यह गीत भी पाँच (स्टेंजा) पर आधारित है। इसका प्रथम स्टेंजा राष्ट्रगीत के लिए चुना गया है। चार स्टेंजा को दर्शाये न जाने का क्या कारण है? बंकिम ने जिस संदर्भ को लेकर यह गीत लिखा। उसे यदि आप छोड़ कर अलग अर्थ निकाल रहे हैं। तो क्या यह न्याय संगत और तर्क संगत है। बंकिम (1838–1894) तकरीबन 56 वर्ष की आयू तक जिये। देहान्त हुआ तब देश गुलाम था। वंदे मातरम गीत उन्होंने 47 वर्ष के उपरान्त लिखा। उनके बडे भाई संजीव चन्द्र समवेत "बंगा दर्शन" पत्रिका चलाते थे। जिसमें गीत प्रकाशित हुआ। सात वर्ष बाद 1882 ई0 में यह प्रयोजन हीन गीत आनन्द मठ में (विस्तार कर के) आनन्द मठ के पात्रों के मुख में घुसा दिया गया। तभी से यह गीत भयानक समस्या का कारण बन जाता है"।

(राष्ट्रद्रोही राष्ट्रगान–पृष्ठ 20–21से उद्धृत)

## सम्पूर्ण वंदे मातरम गीत

(1)

वंदे मातरम

सुजलां सुफलां–मलयज शीतलाम शस्यश्मलां मातरम

वंदे मातरम

शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनीम–फुल्ल कुसुमित द्रुम दल शोभिनीम

सुहासिनीम सुमधुर भाषिणीम–सुखदां वरदां मातरम

वंदे मातरम

(2)

सप्त–कोटि–कण्ठ–कल–कल–निनाद–कराले

द्विसप्त–कोटि–भुजैर्धत–खरकरवाले

अबला केन मा एत बलें!

बहुबलधारिणी नमामि तारिणीं–रिपुदलवारिणीं मातरम

(3)

वन्दे मातरम–

तुमि विद्या,तुमि धर्म–तुमि हृदि, तुमि मम

'त्वं हि प्राणा शरीरे–बहुते तुमि मा शक्ति,



–हृदय तुमि मा भक्ति

तोमारई प्रतिमा गडि मन्दिरे–मन्दिरे मातरम्

(4)

वन्दे मातरम

त्वमाहि दुर्गा दशप्रहरण धारिणी–कमला कमलदल विहारिणी

वाणी विद्या दायिनी–नमामि कमलाम अतुलाम्

सुजलां सुफलां मातरम्

(5)

वन्दे मातरम

श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषितां–धरणी भरणी मातरम्

वन्दे मातरम

## गीत का अर्थ

गीत के अर्थ पर दृष्टिपात करें। पूरे गीत में कहीं भी भारत माता शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है। प्रथम स्टेंजा जिसे राष्ट्रीय गीत बताया जा रहा है। वह पूरे तौर पर दुर्गा की प्रशंसा और उसकी पूजा अर्चना में गाया गया है।

**(प्रथम अर्थ पर दृष्टिपात करें )** गीत में कहा गया है कि–

"शीतल जल, मधुर फल, सुगन्धित वायु तथा हरियाली से पूर्ण (देवी)माता की वंदना करता हूँ। स्वच्छ चाँदनी से प्रकाशित रात्रि ,पेड़ों के पत्तों तथा खिले हुए फूलों से शोभित, मधुर भाषा,मनोहर हंसी वाली सुख देने वाली तथा वरदान देने वाली (देवी) माता(दुर्गा) मैं तेरी वंदना करता हूँ"।

(गीत माला–पृष्ठ–1, निदेशक–गोविन्द नारायण मिश्र–राज्य शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परिषद–एवं शिक्षा निदेशक (बेसिक)उ0 प्र0 लखनऊ–कोष्टक में दिये गये शब्द लेखक की ओर से हैं)

**(द्वितीय अर्थ पर दृष्टिपात करें)**

दुर्गामाँ हम पूजते हैं तुझको–(सुजलां–सफलां मलयज शीतलाम) देवी का भक्त देवी को उसके विशेष गुणों व विशेषणों का वर्णन करते हुए उसे सम्बोधित कर रहा है। खेत और ज़मीन से इसका कोई जोड़ नहीं है। यह भगवान की आरती की तरह शुरू होती है। देवी का भक्त

माँ दुर्गा को खास विशेषणों से सम्बोधित करता है। जैसे (शरयश्मलां शुभ्रज्योत्सना द्रुमदल शोभनीम ) अर्थात चन्द्र की तरह अप्रतिम शोभनीय है शामिल है। सुहासिनी और सुमधुर वाणी वाली तू एक माता है। मैं याचक की भाँति याचना करता हूँ और सुख का वर ही माँगता हूँ। दुर्गा माते हम तुझको पूजते है ।

(उपरोक्त अर्थ 'राष्ट्रद्रोही राष्ट्रगान' पुस्तक से सम्बन्धित है। )

**शेष स्टेंजों का अर्थ इस प्रकार है—**

हे दुर्गा माते हम चूड़ियां नहीं पहने है। हमें शत्रुओं के निर्दलन (नेस्त नाबूद) करने के लिए कोटि कोटियो के हाथों में तलवार सौंप। हे बाहूबल धारण करने वाली देवी ! तूही हमें निश्चित तारणे वाली है। क्योंकि तेरी शक्ति हमारे साथ है अर्थात शत्रुओं का दल वाणी की तरह ध्वस्त कर दे। माँ तुझे ही पूजते हैं और तुझ ही को नमन करते हैं।

हे दुर्गा माते! तू ही विद्या है। तूही धर्म है। तू ही मर्म है। हे माँ जैसे तेरी मूर्तियाँ हर मन्दिर में रखी हुई हैं। वहाँ तू साक्षात बसी है। तू ही शत्रुओं को मारने के लिए हमारी बाहो को शक्ति देती है। हम हृदय से तुझ से ही मदद चाहते हैं। तेरी ही भक्ति करते हैं। तुझ ही को पूजते हैं।

हे माते! तू साक्षात शस्त्रधारी दस भुजा वाली दुर्गा माता है। तू कमल पुष्प में विराजमान लक्ष्मी का रूप है। वाणी देने वाली माँ सरस्वती का रूप है। हे माँ ! तू कण कण में विद्यमान है। तेरी लीला अगाध है। हम तुझे ही पूजते हैं।

अन्तिम स्टेंजा में बंकिम चद्र ने दुर्गा देवी को (मातृ भूमि )संयुक्त बंगाल का प्रतीक (अलामत–निशानी) के तौर पर पेश किया है। इसी स्टेंजा में धरणी(जमीन) का उल्लेख हुआ है। जिस से दुर्गा देवी मुराद है। जिसमें कहा गया है कि –हे बंगाल की देवी दुर्गा इस धरती को हमारी खुशी के लिए शत्रुओं से पाक कर दीजिए। हम विजय पाने के लिए तुझ को पूजते हैं।

## गीत के सम्बन्ध में मुसलमानों का स्पष्ट दृष्टिकोण

यह तो समस्त संसार जानता है,कि मुसलमान एक अल्लाह के सिवा किसी की पूजा अर्चना नहीं करता। वह केवल ईश्वर के सामने



झुकने को महत्तव देता है। उसके अकीदे में न अनेकों भगवान हैं, और न अनगिनत देवता कि जिनका खुश करना उनके लिए जरूरी हो। वह अपने माता–पिता यहाँ तक कि पैगम्बर हजरत मोहम्मद स0 तक को सिजदा नहीं कर सकता, और न उन्हें ईश्वर की खुदाई में शरीक कर सकता है। इस्लाम तो मुसलमानों को इस बात की भी इजाजत नहीं देता कि वह अपने माता पिता के पैर छुएं। अब यदि कोई उनसे यह आशा करे कि वह देश की पूजा करें, तो यह किसी प्रकार भी सम्भव नहीं है।

इस्लाम की शिक्षा देश प्रेम की है। देश भक्ति की नहीं। उसका नारा वतन को महबूब करार देने का है। माबूद कहने या समझने का नहीं। यह ईमान और विश्वास की बात है। जिससे कोई समझौता मुमकिन नहीं। मुसलमान यह जानते हुए किसी भी ऐसे गीत को जिसमें शिर्क का इजहार हो न तो पढ़ सकता है और न गा सकता है। हमारे धर्म गुरूओं ने हर युग में कुफ और शिर्क से बेजारी का इजहार किया। यहाँ तक कि छोटे मोटे घृणित काम से भी मना किया। जबकि उस समय आज जैसी स्थिति न थी। जिस अंदाज का फितना उठा उसी ताकत से उसका विरोध किया गया। हमारे धर्म गुरुओं को किसी भी कीमत पर वंदे मातरम के मामले में बिलकुल नरम रूख नहीं अपनाना चाहिए। हम मुसलमानों को किसी व्यक्ति या किसी पार्टी से देश प्रेम का सर्टिफिकेट नहीं लेना है।

जिस प्रकार मुसलमान दुनिया की किसी बड़ी से बड़ी शक्ति से आतंकित या भयभीत हो कर भी वह ईश्वर के साथ किसी को शरीक नहीं कर सकता । उसी प्रकार वह अपने को देश प्रेमी साबित करने के लिए ऐसे अलूल–जलूल गीत गा कर कोई सर्टिफिकेट प्राप्त करने की जरूरत नहीं समझता।

## देश चमन के समान है

हमारा देश एक चमन (उद्यान उपवन ) के अनुरूप है। जिसमें भाँति–भाँति के फूल हैं। प्रत्येक फूल की अपनी अलग विशेषता है। प्रत्येक फूल के अलग–अलग रंग हैं। प्रत्येक की अपनी अलग सुगन्ध है। गुलाब भी है बेला भी है गेंदा भी है और चमेली भी। किसी का

रंग गुलाबी तो किसी का सफेद तो किसी का पीला । गर्ज जितने फूल उतने रंग उतनी विशेषतायें । इन फूलों की ताजगी व शादाबी उनके अपने रंग ही में बेहतर है। यदि हर फूल को एक ही रंग देने की कोशिश की जायेगी तो चमन चमन न रहेगा। यह बात प्रत्येक देश प्रेमियों के सोचने की है ? देश भक्ति का ढोंग करने वाले इसे समझने और सोचने में अक्षम हैं।

इतने बड़े विशाल देश में जहाँ अनेक धर्म अनेक भाषा अनेक सभ्यता व संस्कृति के लोग रहते हों। उनकी मनो भावनायें उनके विश्वास उनकी संस्कृति आदि को नकार कर मात्र अपनी इच्छा व सोच को लागू करके प्रत्येक नागरिक को अपनी इच्छा व सोच के लिए प्रतिबन्धित करना । देश की एकता और अखण्डता के लिए खतरे की घंटी नहीं तो और क्या है ? इस सोच से देश तो देश एक परिवार का चलना भी दुर्लभ हो जाएगा।

"वंदे मातरम" विषय को लेकर राष्ट्रीय सहारा उर्दू के चीफ एडीटर अजीज बर्नी ने अपने लेख "आजाद भारत का इतिहास"20 नवम्बर 2009 में भारत के भाग्य विधाताओं (जिन्हें स्वयं अपने भाग्य का पता नहीं) के समक्ष समस्त राष्ट्रीय चिन्हों की पृष्ठ भूमि पर विस्तार से चर्चा करते हुए ,यह प्रश्न खड़ा किया है कि–"जब हमारा राष्ट्रीय झंडा एक राष्ट्रीय चिन्ह एक राष्ट्रीय गान एक राष्ट्रीय पंचाँग एक राष्ट्रीय पशु एक राष्ट्रीय पक्षी एक राष्ट्रीय फूल एक राष्ट्रीय फल एक राष्ट्रीय वृक्ष एक तो फिर हमारी ऐसी क्या मजबूरी है कि एक राष्ट्रीय गान के होते हुए हमें एक राष्ट्रीय गीत की जरूरत क्यों महसूस हो रही है ? उन्होने यह प्रश्न खड़ा करके हिन्दू राष्ट्र वादियों की दूषित मानसिकता व षडयंत्र को समझने का संकेत दिया है।

यह बात पूर्णतया स्पष्ट है कि किसी जातीय सम्प्रदायिक एवं विकृत मानसिकता रखने वाले व्यक्तियों द्वारा रचित कोई रचना या अंदोलन रचनात्मक हो ही नहीं सकता। यह किसी विशेष वर्ग को क्षणिक लाभ तो पहुँचा सकता है परन्तु सम्पूर्ण राष्ट्र को एकीकरण के सूत्र में बाँधने की मज़बूती प्रदान नहीं कर सकता। अतः ऐसे विघटन कारी साहित्य संगठनों एवं गीतों को नकार देने में ही देश व समाज का हित सुरक्षित है।

## अध्ययन कीजिए ज्ञान बढ़ाइये

| नाम पुस्तक | लेखक | मूल्य |
|---|---|---|
| 1 इस्लाम धर्म | मौलाना अबुल अला मौदूदी | 30 |
| 2 शान्ति मार्ग | मौलाना अबुल अला मौदूदी | 7 |
| 3 कुरान और पैगम्बर | मौलाना अबुल अला मौदूदी | 7 |
| 4 जीवन मृत्यु के पश्चात | मौलाना अबुल अला मौदूदी | 5 |
| 5 इस्लाम क्या है? | मौलाना मुहम्मद मंजूर नोमानी | 35 |
| 6 नराशंस व अन्तिम ऋषि | डा0 वेद प्रकाश उपाध्याय | 15 |
| 7 कल्कि अवतार | डा0 वेद प्रकाश उपाध्याय | 15 |
| 8 सत्य खोज सत्य परख | एम0 एस0 बहराइची | 10 |
| 9 इस्लाम दर्शन | डा0 गणेश दत्त सारस्वत | 25 |
| 10 गलतफहमियो का निवारण | डा0 जाकिर नायक | 20 |
| 11 इस्लाम स्वय सिद्धि ईश्वरीय जीवन व्यवस्था | राजेन्द्र लाल श्रीवास्तव | 20 |
| 12 इस्लाम के पैगम्बर ह0 मुहम्मद स0 | रामा कृष्णा राव | 15 |
| 14 इस्लाम मानवता पूर्ण ईश्वरीय धर्म | लाला काशी राम चावला | 20 |